डाक पंजीयन संख्या/643/2016-2018/2016
RNI-MPHIN/2015/62199

नई सोच, नई पहल

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष : 06 अंक : 12 फरवरी 2021 मूल्य: ₹ 30 पृष्ठ : 44

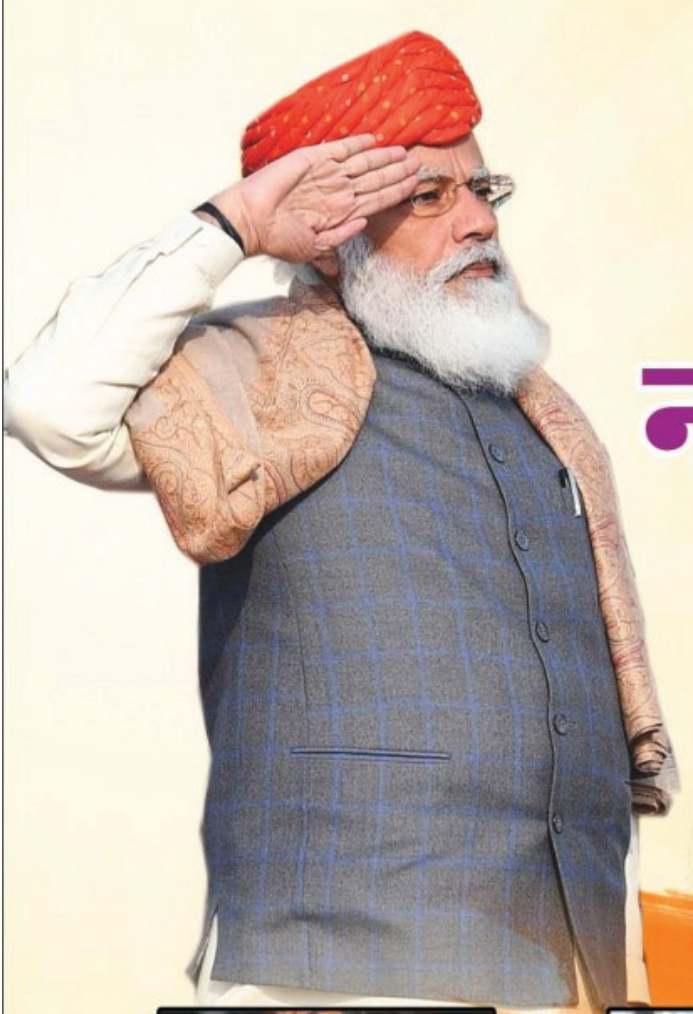

नमन गणतंत्र

खट्टा-मीठा रहा आम बजट

किसान और सरकार में तकरार जारी

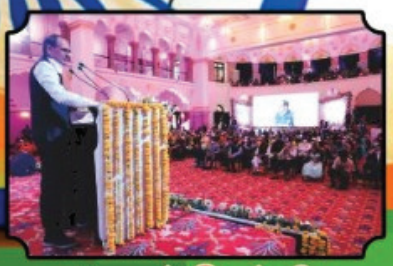

पंख से मिलेगी बेटियों को उड़ान

संपादक की कलम से

आत्मनिर्भर भारत की ओर....

संसद में केंद्रीय बजट के जरिए अर्थव्यवस्था को बल देने की जो कोशिशें हुई हैं, उनका जमीनी असर न केवल योजनाओं और बजट के क्रियान्वयन, बल्कि सरकार के भावी निर्णयों पर निर्भर करेगा। जो प्रयास मूलभूत ढांचे में निवेश या उद्योग जगत को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए हैं, उनसे हम उम्मीद कर सकते हैं। बजट से भी जाहिर है, सरकार लोगों को मिल रही प्रत्यक्ष आर्थिक मदद के अभी तक के प्रयासों से संतुष्ट है और इसका बखान बजट में बखूबी हुआ है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट में आत्मनिर्भर भारत पर जोर दिया है, तो कोई आश्चर्य नहीं। कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए सरकार के 27.1 लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भर भारत पैकेज से संरचनात्मक सुधारों को बढ़ावा मिला है। अब आम बजट में सरकार ने 64,180 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ आत्मनिर्भर स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखा है। स्वास्थ्य ढांचा मजबूत करना कितना जरूरी है, यह हमने कोरोना के समय अच्छी तरह समझ लिया है। इसके अलावा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भी जारी रहेगा। बहरहाल, जब सरकारी खजाना दबाव में है, तब आयकरदाताओं को वैसे भी राहत की ज्यादा उम्मीद नहीं थी। सरकार ने 75 साल या उससे अधिक उम्र के पेंशनभोगियों को कुछ राहत दी है। 135 करोड़ लोगों के देश में करीब छह करोड़ लोग आयकर रिटर्न दाखिल करते हैं, जबकि करीब तीन करोड़ लोग ही आयकर चुकाते हैं। मुश्किल समय में सरकार आयकर का दायरा बढ़ाने के लिए कुछ कर सकती थी। यह आयकर बढ़ाने का समय नहीं है, यह अन्य करों को बढ़ाने का भी समय नहीं है। ऐसे में, सरकार ने पेट्रोल पर 2.5 रुपये प्रति लीटर का अधिभार लगाया है, जबकि डीजल पर 4 रुपये। इससे पेट्रोल, डीजल की कीमतों को तीन अंकों में जाने और बने रहने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा, मतलब महंगाई बढ़ेगी। मोबाइल उपकरण पर कस्टम ड्यूटी बढ़ेगी, लेकिन इसका लाभ तभी है, जब देशी कंपनियां स्वयं पर्याप्त उपकरण बनाने लगें, वरना आज के समय में मोबाइल फोन को महंगा करने की दिशा में कोई भी निर्णय अनुकूल नहीं है। जब भारत को निर्यात बढ़ाने के लिए ज्यादा प्रयत्न करने हैं, तब आयात बढ़ाने के छोटे-मोटे उपाय भले किसी निजी कंपनी या उपभोक्ता के लिए फायदेमंद हों, लेकिन हमें व्यापकता में देश की आत्मनिर्भरता बढ़ाने के बारे में ज्यादा सोचना चाहिए। सस्ते घर की सुविधा, डूबते कर्ज का प्रबंधन, सरकारी बैंकों को पूंजी देने का प्रस्ताव, उज्ज्वला योजना का विस्तार, रेल व बस सेवा विस्तार, किसानों को फसल लागत से डेढ़ गुना मूल्य देने का इरादा इत्यादि अनेक प्रशंसनीय कोशिशें हैं। हम समझ सकते हैं, विनिवेश से भी सरकार पैसे जुटाना चाहती है, यह पुराना एजेंडा है। पिछले बजट में 2.1 लाख करोड़ रुपये विनिवेश से जुटाने का अनुमान था और इस बार 1.75 लाख करोड़ रुपये जुटाने का इरादा है, लेकिन यह एक ऐसा मोर्चा है, जहां सरकार को राजनीति और अनेक अड़चनों का सामना करना पड़ेगा। ग्रामीण विकास, रोजगार और सामाजिक क्षेत्र में सरकार के खर्च का बढ़ना तय है, अतः सरकार को इस दौर में वित्तीय घाटे की चिंता ज्यादा नहीं करनी चाहिए। यह ज्यादा व सुनियोजित खर्च के साथ अर्थव्यवस्था में मांग और विकास की गति बढ़ाने का समय है।

भरत सिंह चौहान

संपादक

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट में आत्मनिर्भर भारत पर जोर दिया है, तो कोई आश्चर्य नहीं। कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए सरकार के 27.1 लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भर भारत पैकेज से संरचनात्मक सुधारों को बढ़ावा मिला है। अब आम बजट में सरकार ने 64,180 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ आत्मनिर्भर स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखा है। स्वास्थ्य ढांचा मजबूत करना कितना जरूरी है, यह हमने कोरोना के समय अच्छी तरह समझ लिया है। इसके अलावा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भी जारी रहेगा।

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 06, अंक 12, फरवरी 2021

मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	बहादुर सिंह चौहान
संपादक	भरत सिंह चौहान
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह
उपसंपादक	अर्पित गुप्ता
	शशिभूषण चौहान (मप्र)
	पुष्पेन्द्र तोमर
	संदीप प्रधान
	प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
	विपिन तोमर
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
एडिटिंग	इमरान गौरी
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक

रश्मि चौहान, न्यूज ऐंकर

ब्यूरो प्रमुख

पंकज त्रिपाठी	मध्य प्रदेश
राजानल शर्मा	छत्तीसगढ़
नरेन्द्र शर्मा	हरियाणा
केशव प्रसाद शर्मा	चंबल संभाग
विजस कुमार सिंह	बिहार/झारखंड
अमित कुमार	जम्मू-कश्मीर (यूटी)
अमन राय	बर्दवान पश्चिम बंगाल
नारायण लाल	बेंगलुरु
दीपक रलहन	पंजाब
नैनाराम सिरवी	पाली, राजस्थान
केवल राम मालवीय	इंदौर
राजा दुबे	सीहोर
राजेश लोधी	रायसेन
रीतेश कटरे	बालाघाट
सुरजीत राजावत	ग्वालियर
विनोद पाठक	श्योपुर
प्रेमकिशोर शर्मा	आगरा मंडल
शशिकांत खरे	झांसी
हरिनिवास दुबे	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
सोनू कुमार माथुर	एटा, (उत्तर प्रदेश)
प्रवेन्द्र सिंह	आगरा (उत्तर प्रदेश)
अरविंद प्रताप सिंह	कन्नौज (उत्तर प्रदेश)
रूपसिंह	इटावा, (उत्तर प्रदेश)
किरण राठौर	औरैया, (उत्तर प्रदेश)
अरूण शुक्ला	भिण्ड
मोहन मांझी	गोहद
अमित शर्मा	ग्वालियर

कार्यालय

जी. एस. प्लाजा, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

हेल्पलाईन: 0751-4901403, 8269307478

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान। कंचन प्रिंटिंग प्रेस निम्बालकर का बाड़ा, तेजी की बजरिया नियर पी.एंड.एन. बैंक नया बाजार लश्कर ग्वालियर म.प्र. से मुद्रित तथा दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास, गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड, गोला का मंदिर जिला ग्वालियर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक भरत सिंह चौहान। (समाचारों के चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) दूरभाष 8269307478

इस अंक में

पुष्पांजली टुडे टीम

सादिक मिश्रा	ऑल इंडिया रिपोर्टर
महेन्द्र शर्मा	चम्बल संभाग
गौरव शर्मा	चम्बल संभाग
योगेश शर्मा	चम्बल संभाग
राधा तोमर	अम्बाह
अंकित कुमार	अजीतमल, औरैया
भीमसेन तोमर	अम्बाह
सुनील सिंह तोमर	अम्बाह
रवीकांत पाठक	पिछोर
रंजीत बघेल	सेंवढ़ा, दतिया
राहुल कुमार	आगरा
छोटे सिंह भदौरिया	मालनपुर
संतोष सिंह भदौरिया	गोरमी
हरिओम परिहार	खनियाधाना
हरिओम चतुर्वेदी	करैरा
अरिमर्दन सिंह भदौरिया	भिण्ड, क्राइम रिपोर्टर
निर्मला	भिण्ड
राहुल खन्ना	इंदौर
शिवकांत ओझा	रौन
आदित्य सिकरवार	पोरसा
वासुदेव मिश्रा	ग्वालियर
शहनवाज खान	श्योपुर
रियाज मोहम्मद	हरदा
चेतना कारले	खरगोन

राजस्थान में राहुल गांधी 16

राम मंदिर संकल्प... 23

ग्वालियर रियासत के एक नए युग की शुरूआत 35

सिनेमा 40

किसान आंदोलनः पीएम मोदी की अपील के बाद किसान नेता फिर से बातचीत को तैयार

कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलन कर रहे किसान नेता एक बार फिर सरकार से बातचीत करने को तैयार हो गए हैं। उन्होंने यह फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील के बाद लिया। मोदी ने राज्यसभा में किसान नेताओं से अपील की कि विरोध खत्म कर बातचीत के लिए आगे आएं। इसके करीब 5 घंटे बाद संयुक्त किसान मोर्चे के सदस्य शिव कुमार कक्का ने कहा कि वे अगले दौर की बातचीत के लिए तैयार हैं, सरकार उन्हें मीटिंग का दिन और समय बता दे। मोदी ने राज्यसभा में कहा, मैं देख रहा हूं कि पिछले कुछ समय से इस देश में नई जमात पैदा हुई है। एक नई बिरादरी सामने आई है- आंदोलनजीवी। आप देखेंगे कि आंदोलन चाहे वकीलों का हो, स्टूडेंट्स का हो, मजदूरों का हो, हर आंदोलन में ये जमात नजर आएगी। ये आंदोलन के बिना जी नहीं सकते। हमें इन्हें पहचानना होगा।% इस बयान पर किसान नेताओं ने आपत्ति जताई है।

मोदी के आंदोलनजीवी वाले बयान पर शिव कुमार कक्का ने कहा कि लोकतंत्र में आंदोलन की अहम भूमिका होती है। लोगों को सरकार की गलत नीतियों का विरोध करने का अधिकार है।

मिनिमम सपोर्ट प्राइसपर प्रधानमंत्री के बयान पर भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राकेश टिकैत बोले, प्रधानमंत्री ने कहा कि स्क्कहै, था और रहेगा, लेकिन यह नहीं बोले कि स्क्क पर कानून बनाया जाएगा। देश भरोसे से नहीं चलता। यह संविधान और कानून से चलता है।26 जनवरी को दिल्ली में किसानों की ट्रैक्टर रैली में हुई हिंसा के बाद लगा था कि किसान आंदोलन अब ढीला पड़ जाएगा, लेकिन इसके बजाय अब किसान नेता आंदोलन

को तेज करने में जुटे हैं। इसी सिलसिले में हरियाणा के कितलाना टोल पर महापंचायत हुई थी। इसमें किसान नेता दर्शनपाल ने कहा कि सरकार को झुकाने के लिए असहयोग आंदोलन छेड़ना होगा। यह भी फैसला किया कि हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश से दिल्ली जाने वाली फल-सब्जी और दूध समेत जरूरत के हर सामान पर रोक लगानी होगी। साथ ही हरियाणा में अडानी और अंबानी के सामान का बायकॉट करना होगाकिसानों और सरकार के बीच अब तक 12 दौर की बातचीत हुई है, लेकिन कोई हल नहीं निकला। किसान इस बात पर अड़े हैं कि सरकार को तीनों कृषि कानून वापस लेने चाहिए। वहीं सरकार कह रही है कि वह कानूनों में बदलाव करने को तैयार है और किसान चाहें तो तीनों कानून डेढ़ साल तक होल्ड भी किए जा सकते हैं। दोनों के बीच आखिरी मीटिंग 22 जनवरी को हुई थी।

लोकसभा में विपक्षी दलों के हंगामे पर भड़के पीएम मोदी, बोले

सच को रोकने के लिए हो रहा हो हल्ला

नए कृषि कानूनों के विरोध में सड़क से संसद तक संग्राम लगातार जारी है। इसी बीच बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान अपना संबोधन दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार किसानों का बहुत सम्मान करती है और कृषि क्षेत्र की बेहतरी के लिए हमने ईमानदारी से प्रयास किए हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने कहा कि हम मानते हैं कि इसमें सही में कोई कमी हो, किसानों का कोई नुकसान हो, तो बदलाव करने में क्या जाता है। ये देश देशवासियों का है। हम किसानों के लिए निर्णय करते हैं, अगर कोई ऐसी बात बताते हैं जो उचित हो, तो हमें कोई संकोच नहीं है।

विपक्ष के हंगामे पर गरम हुए मोदी

वहीं किसानों के मुद्दे पर बोलते समय विपक्ष ने जोरदार हंगामा किया और इस हंगामे से पीएम मोदी गरम हो गए। उन्होंने कहा कि संसद में ये हो-हल्ला, ये आवाज, ये रुकावटें डालने का प्रयास, एक सोची समझी रणनीति के तहत हो रहा है। रणनीति ये है कि जो झूठ, अफवाहें फैलाई गई हैं, उसका पर्दाफाश हो जाएगा। इसलिए हो-हल्ला मचाने का खेल चल रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि कानून बनने के बाद किसी भी किसान से मैं पूछना चाहता हूं कि पहले जो हक और व्यवस्थाएं उनके पास थी, उनमें से कुछ भी इस नए कानून ने छीन लिया है क्या? इसका जवाब कोई देता नहीं है, क्योंकि सबकुछ वैसा का वैसा ही है। पीएम ने कहा कि मैं हैरान हूं पहली बार एक नया तर्क आया है कि हमने मांगा नहीं तो आपने दिया क्यों। दहेज हो या तीन तलाक, किसी ने इसके लिए कानून बनाने की मांग नहीं की थी, लेकिन प्रगतिशील समाज के लिए आवश्यक होने के कारण कानून बनाया गया।

पीएम ने कहा कि किसान आंदोलन को मैं पवित्र मानता हूं। भारत के लोकतंत्र में आंदोलन का महत्व है, लेकिन जब आंदोलनजीवी पवित्र आंदोलन को अपने लाभ के

लिए अपवित्र करने निकल पड़ते हैं तो क्या होता है?

देश में नई बिरादरी सामने आई- आंदोलनजीवी

प्रधानमंत्री ने कहा, 'हम लोग कुछ शब्दों से परिचित हैं- श्रमजीवी, बुद्धिजीवी। मैं देख रहा हूं कि पिछले कुछ समय से इस देश में नई जमात पैदा हुई है। एक नई बिरादरी सामने आई है- आंदोलनजीवी। आप देखेंगे कि आंदोलन चाहे वकीलों का हो, स्टूडेंट्स का हो, मजदूरों का हो, हर आंदोलन में ये जमात नजर आएगी। ये आंदोलन के बिना जी नहीं सकते। हमें इन्हें पहचानना होगा।'मोदी ने कहा, 'ऐसे आंदोलनजीवी सब जगह पहुंचकर आइडियोलॉजिकल स्टैंड ले लेते हैं। नए-नए तरीके बताते हैं। ये अपना आंदोलन खड़ा नहीं कर पाते। किसी का आंदोलन चल रहा तो वहां जाकर बैठ जाते हैं। ये सारे आंदोलनजीवी परजीवी होते हैं।' मोदी ने कहा, 'देश प्रगति कर रहा है और हम फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट की बात कर रहे हैं, लेकिन बाहर से एक नया खतरा नजर आ रहा है। ये नया खतरा है- फॉरेन डिस्ट्रक्टिव आइडियोलॉजी। इस खतरे से देश को बचाने के लिए हमें और जागरूक रहने की जरूरत है।' प्रधानमंत्री का इशारा क्लाइमेट एक्टिविस्ट ग्रेटा थनबर्ग से लेकर पॉप सिंगर रिहाना तक ऐसी विदेशी हस्तियों पर था, जिन्होंने हाल ही में अपनी सोशल मीडिया पोस्ट्स के जरिए किसान आंदोलन का समर्थन किया है। प्रधानमंत्री ने विपक्ष को आड़े हाथ लिया। कहा- मजा ये है कि जो लोग उछल-उछलकर सियासी बयानबाजी करते हैं, जब उन्हें मौका मिला तो उन्होंने भी आधा-अधूरा किसानों के लिए कुछ न कुछ किया ही है। इस चर्चा में कानून की स्पिरिट पर तो किसी ने बात ही नहीं की। यही शिकायत की कि तरीका ठीक नहीं था, आपने जल्दी कर दी, इसको नहीं पूछा...। ये तो होता रहता है। परिवार में शादी होती है तो भी फूफी नाराज होती है कि हमें कहां बुलाया था। इतना बड़ा अपना परिवार है तो ऐसा होता ही रहता है।

एक ही मंच पर ममता-शाह के दावे:दीदी बोलीं-221 सीटें जीतेंगे, शाह बोले- हम तृणमूल सरकार को उखाड़ फेकेंगे

पश्चिम बंगाल में सियासी घमासान तेज हो गया है। भाजपा और सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस चुनाव से पहले एड़ी-चोटी का जोर लगा रहीं हैं। इस बीच कोलकाता में इंडिया टुडे कॉन्क्लेव 2021 के मंच पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने-अपने दावे किए। ममता ने कहा कि विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी की सीटें 221 से कम नहीं होंगी। हम अपनी जीत के लिए पूरी तरह आश्वस्त हैं। हमें दो बार जितनी सीटें मिली हैं, इस बार उससे ज्यादा तो जरूर आएंगी। हमें इस पर 110प्रश विश्वास है।इसके बाद शाह ने कहा कि मैं बंगाल में ममता सरकार को उखाड़ने ही आया हूं। यहां भाजपा की सरकार तभी आ सकती है, जब ञ्रस्ष्ट सरकार को उखाड़कर फेंक दिया जाए। ममता जी की सरकार ठीक से नहीं चल रही है, जनता इस सरकार को उखाड़कर फेंक देगी। हमारी ममता दीदी से कोई कड़वाहट नहीं है, मगर उनके राज में भ्रष्टाचार हो रहा है। उससे उन्हें चिढ़ होती है तो कोई क्या कर सकता है।

भाजपा बांटने की राजनीति कर रही

पश्चिम बंगाल में कभी जाति की राजनीति नहीं हुई, लेकिन अब भाजपा ने इसकी शुरुआत कर दी है। भाजपा के लोग हर धर्म को एक साथ लेकर नहीं चलते हैं, बल्कि बांटने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा वालों ने बंगालियों को भी बांट दिया है, उन्होंने बंगालियों को भी बंगालियों से लड़ा दिया है। वे कहते हैं कि आप बांग्लादेश के बंगाली हो और आप यहां के बंगाली हो। भाजपा सिर्फ गुंडागर्दी की राजनीति करना जानती है। वह राज्य सरकारों को इनकम टैक्स और सीबीआई के जरिए डराने का काम करती है।

यहां आकर हमें धमका रहे

गृह मंत्री का हक है, वे यहां आ सकते हैं और बोल सकते हैं। मैंने लक्ष्मण रेखा का पालन किया, लेकिन उन्होंने क्या किया? यहां आकर हमें धमका रहे हैं। बोलते हैं कि हमें बर्बाद कर देंगे। हमें देख लेंगे। हम किसी से डरने वाले नहीं हैं। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि जय श्री राम हमारा नहीं तुष्टिकरण की राजनीति के खिलाफ बंगाल के लोगों का नारा है। यह राजनीति से अलग नहीं है, यह संस्कृति और भावनाओं का सवाल है। दुर्गा पूजा के लिए क्या कोर्ट के दरवाजे खटखटाने होंगे? बसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजा नहीं कर पाएंगे क्या? रामनवमी के दिन शोभा यात्रा नहीं निकाल सकते? ये नारा परिवर्तन का नारा है। मुझे नहीं पता कि दीदी जय श्रीराम के नाम से क्यों चिढ़ती हैं। जय श्रीराम को धार्मिक नारे के रूप में इंटरप्रेट करने का प्रयास जो तृणमूल कांग्रेस कर रही है, वो गलत है। लेफ्ट-कांग्रेस और अन्य पार्टियों के गठबंधन से हमें कुछ लेना देना नहीं है। हमें पूरा विश्वास है कि हम पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बना रहे हैं। लोकसभा में हमारे वोट बढ़े हैं। पिछली बार के चुनाव में जनता उलझन में थी कि भाजपा जीत सकती है या नहीं जीत सकती। लेकिन इस बार उन्हें पक्का विश्वास है कि भाजपा जीत रही है। राज्य का अगला मुख्यमंत्री बंगाल का ही धरती पुत्र होगा और भाजपा से ही होगा, लेकिन कैलाश विजयवर्गीय ??? ष्टरू नहीं बनेंगे। मैं बंगाल के किसानों से कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार बनने के बाद हम यहां के किसानों को उनका बकाया 12,000 रुपए भी देंगे और 6,000 रुपए की नई किस्त भी देंगे। हम बंगाल में हमारी तैयारी कर रहे हैं, बंगाल की जनता को अपने साथ जोड़ रहे हैं। इसके लिए हम मेहनत कर रहे हैं।

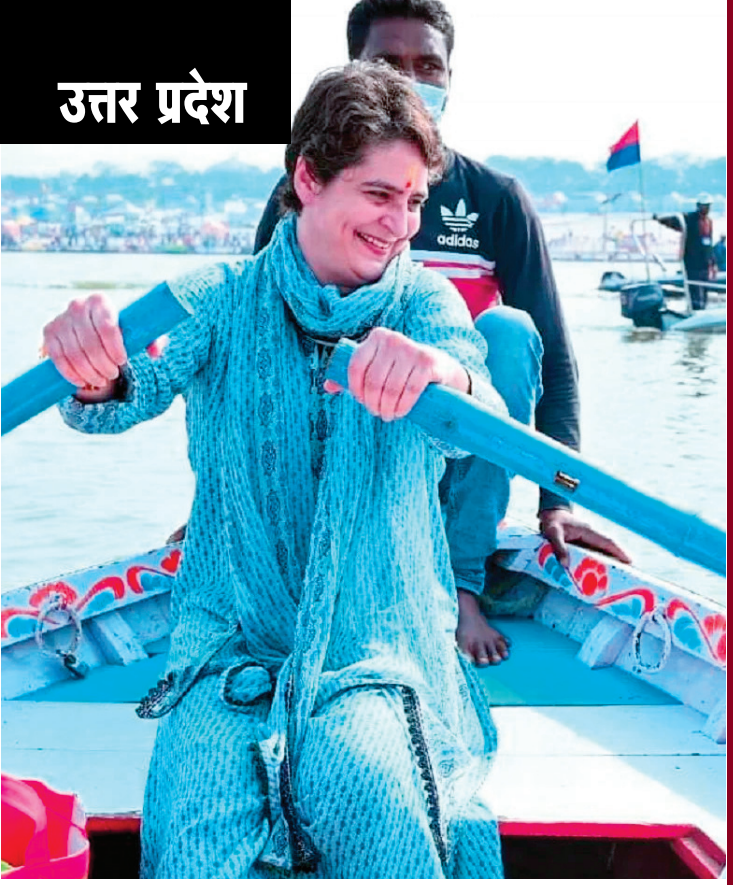

गंगा में डुबकी लगाकर कांग्रेस की नैया पार लगा पाएंगी प्रियंका गांधी?

प्रियंका गांधी ने गुरुवार को मौनी अमावस्या के दिन प्रयागराज में गंगा नदी में स्नान किया। इस अवसर पर उन्होंने जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती से आशीर्वाद भी प्राप्त किया। इसके एक दिन पहले वे सहारनपुर में थीं और वहां उन्होंने शाकुंभरी देवी के दर्शन किए। सहारनपुर में प्रियंका गांधी की सभा के मंच पर प्रमुख अखाड़ों के संत भी उपस्थित थे। प्रियंका ने उनसे भी आशीर्वाद लिया। कांग्रेस लगातार प्रियंका गांधी को हिंदूवादी छवि के तौर पर जनता के सामने पेश कर रही है।

सहारनपुर में कांग्रेस महासचिव:काला कुर्ता, भगवा गमछा और माथे पर लाल टीका; किसान महापंचायत में नए अंदाज में दिखीं प्रियंका गांधी

बड़ा सवाल यह है कि क्या इस छवि के सहारे वे 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मजबूत टक्कर दे पाएंगी? दरअसल पिछले कई चुनावों से जिस तरह भाजपा हिंदुत्व की राजनीति को धार देकर कांग्रेस को हिंदू विरोधी बताकर हिंदुओं को अपने पक्ष में गोलबंदी करती रही है। अब 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने प्रियंका गांधी को राज्य की जिम्मेदारी दी है जहां पार्टी का मुकाबला उस भाजपा से है जिसका नेतृत्व राज्य में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कर रहे हैं जो गोरक्ष पीठाधीश्वर होने के साथ-साथ कट्टर हिंदुत्ववादी भी हैं। प्रियंका ने इसी हिंदू कार्ड को ध्यान में रखकर कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम को आगे किया है। प्रियंका की हिंदू छवि निखारने के लिए आचार्य प्रमोद कृष्णम लगातार हिंदुओं में यह संदेश दे रहे हैं कि कांग्रेस और प्रियंका उतने ही हिंदू हैं जितने कि भाजपा वाले या कोई और। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणों को कांग्रेस के साथ फिर से जोड़ने के लिए ब्राह्मण मुख्यमंत्री का नारा बुलंद किया जा रहा है। हाथरस कांड के समय दिल्ली के वाल्मीकि मंदिर में जाकर प्रियंका ने रामधुन गाई। कुल मिलाकर प्रियंका गांधी की हिंदूवादी राजनीति को धार देने की लगाततार कोशिश हो रही है।

प्रियंका गांधी को हिंदूवादी छवि में पेश कर कांग्रेस क्या संदेश देना चाहती है? यह सवाल पूछने पर प्रियंका गांधी के प्रमुख सलाहकार कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने अमर उजाला से कहा कि भाजपा ने पूरी साजिश के तहत कांग्रेस को एक हिंदू विरोधी पार्टी के तौर पर जनता के सामने पेश करना शुरू कर दिया। इससे कुछ लोगों के मन में भ्रम पैदा हो गया। जबकि इस देश ने देखा है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू से

लेकर इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी हमेशा हिंदू देवी-देवताओं के दर्शन करते रहे हैं। उन्होंने हिंदू धर्माचार्यों से आशीर्वाद भी प्राप्त किया है। आचार्य प्रमोद कृष्णम के मुताबिक प्रियंका गांधी का गंगा स्नान करना उनकी व्यक्तिगत श्रद्धा का प्रश्न है और इसे किसी अन्य तरीके से नहीं देखा जाना चाहिए। लेकिन उनका व्यक्तिगत मानना है कि भाजपा के दुष्प्रचार को खत्म करने के लिए प्रियंका का इस तरह जनता के सामने आना बेहद जरूरी है। इससे भाजपा के दुष्प्रचार से निपटने में मदद मिलेगी।

वहीं दूसरी ओर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा पार्टी के जय जवान-जय किसान कार्यक्रम के तहत सहारनपुर के चिलकाना में हुई किसान महापंचायत में शामिल हुईं। कृषि कानूनों के विरोध में सड़क से संसद तक संग्राम मचा है। किसान नेताओं और राष्ट्रीय लोकदल के बाद अब कांग्रेस ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में किसान महापंचायत के जरिए अपनी चुनावी तैयारी शुरू कर दी है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा पार्टी के जय जवान-जय किसान कार्यक्रम के तहत सहारनपुर के चिलकाना में हुई किसान महापंचायत में शामिल हुईं। मंच पर पहुंची प्रियंका के अंदाज की खूब चर्चा हो रही है। प्रियंका काला कुर्ता, गले में भगवा गमछा और माथे पर लाल टीका लगाकर महापंचायत में पहुंचीं। इससे पहले शाकुंभरी देवी मंदिर में पूजा की। इसके बाद वह रायपुर स्थित खानकाह में हजरत रायपुरी की दरगाह पहुंची।

टीकाकरणः कोरोना के खिलाफ जंग जीतता भारत

देश में कोविड-19 का प्रसार क्या थमता दिख रहा है? तथ्य बताते हैं कि हर दिन नए मामले अब 10 हजार से भी कम हो गए हैं। बीते सात दिनों का रोजाना का औसत 12 हजार से नीचे आ चुका है। इतना ही नहीं, पिछले दस दिनों से हर रोज कोरोना की जंग हारने वाले मरीजों की संख्या भी 150 से नीचे लाने में हम सफल हुए हैं। कल सरकार की तरफ से यह भी कहा गया कि पिछले 24 घंटे में 15 राज्यों व केंद्र शासित क्षेत्रों में कोरोना से एक भी मौत नहीं हुई है, जिससे लगता है कि यह वायरस अब कमजोर पड़ने लगा है। ये आंकड़े निस्संदेह सुकूनदेह हैं, मगर इनसे यह भ्रम नहीं पाल लेना चाहिए कि कोरोना महामारी बहुत जल्द अतीत बन सकती है। विशेषकर सांस संबंधी संक्रमण के बारे में यही कहा जाता है कि नए मामलों के सामने न आने के बावजूद कुछ वक्त तक बीमारी बनी रहती है। लिहाजा, हमें हरसंभव सावधानी बरतनी ही होगी।

कोरोना वायरस से लड़ने में भारत की दिखती कामयाबी जितनी सुखद लग रही है, उतनी ही उत्साहजनक भी है। भारत में अभी 60 लाख लोगों को भी कोरोना टीका नहीं लगा है, लेकिन तब भी कोरोना संक्रमण का काबू में आते दिखना अनायास ही आकर्षण का केंद्र बन रहा है। पिछले साल सितंबर के महीने में एक समय वह भी था, जब लगभग हर दिन देश में एक लाख से ज्यादा कोरोना मामले मिल रहे थे। अब प्रतिदिन करीब दस हजार मामलों का सामने आना एक महत्वपूर्ण संकेत है। आंकड़ों के हिसाब से देखें, तो 130 करोड़ की आबादी वाला विशाल भारत कोरोना मामलों को न्यूनतम स्तर पर ले आया है।

देश में कोरोना वैक्सीन के इस्तेमाल को सशर्त मंजूरी मिले एक महीना बीत चुका है। 3 जनवरी को सरकार ने ऑक्सफर्ड-एस्ट्राजेनेका के कोविशील्ड और भारत बायोटेक के कोवैक्सिन टीकों को मंजूरी दी थी। हालांकि टीकाकरण अभियान की शुरुआत 16 जनवरी से हुई, फिर भी भारत सबसे ज्यादा तेजी से 40 लाख लोगों को टीका देने वाला देश बन गया है। इस बीच टीके के मोर्चे पर कुछ और उत्साह बढ़ाने वाली खबरें आई हैं। रूस में निर्मित वैक्सीन स्पुतनिक ङ्क को लेकर शुरू में कई तरह की आशंकाएं जताई जा रही थीं। इसकी मुख्य वजह थी तीसरे फेज की ट्रायल रिपोर्ट का न आना। मगर अब फील्ड रिपोर्ट आ गई है और इस टीके की कार्यकुशलता 91.6 प्रतिशत बताई जा रही है। हालांकि अमेरिकी कंपनियों मॉडर्ना और फाइजर के

टीकों के मामलों में यह आंकड़ा 94 फीसदी पाई गई है, लेकिन स्पुतनिक ङ्क की एक विशेषता उसकी कम लागत भी है। मॉडर्ना और फाइजर के मुकाबले स्पुतनिक ङ्क की कीमत करीब एक तिहाई पड़ती है, जो गरीब देशों के लिए बड़े काम की सूचना है। भारत में दिए जा रहे टीके कोविशील्ड और कोवैक्सिन सस्ते तो हैं, लेकिन उनकी कार्यकुशलता को लेकर अभी कोई आधिकारिक रिपोर्ट नहीं आई है। टीके का दूसरा डोज पड़ जाने के बाद ही जाना जा सकेगा कि जमीनी तौर पर ये कितने कारगर साबित होते हैं। बहरहाल, स्पुतनिक ङ्क की कामयाबी भारत के लिए भी अहम है। सस्ते और कारगर टीकों की जरूरत यहां इतने बड़े पैमाने पर पड़ने वाली है कि एक-दो टीके काफी नहीं होंगे, हालांकि कोरोना के नए मामलों की संख्या में कमी से फिलहाल थोड़ी राहत जरूर है। यह राहत देश ही नहीं, दुनिया के स्तर पर भी दिख रही है लेकिन इस वायरस के प्रकोप की लहर पीछे जाकर दोबारा ज्यादा वेग से लौटने के कई उदाहरण पेश कर चुकी है। ताजा मामला ब्रिटेन का है जहां न केवल कोरोना के मामले बिल्कुल नीचे जाने के बाद अचानक बढ़ गए बल्कि वायरस के एक नए रूप का आतंक वहां कोरोना की शुरुआत से भी ज्यादा दिखाई पड़ रहा है।

उत्तराखंड में ग्लेशियर टूटने से भारी तबाही, मलबे में तब्दील नदी

उत्तराखंड में एक बार फिर तबाही

“ उत्तराखंड के चमोली जिले में ग्लेशियर टूटने से भारी तबाही जितनी दुखद है, उतनी ही चिंताजनक भी। शुरुआती रिपोर्ट से पता चलता है कि नुकसान ज्यादा हुआ है। तबाही का समग्र आकलन आने वाले दिनों में होगा, लेकिन जो शुरुआती सूचनाएं प्राप्त हो रही हैं, उनसे पता चलता है कि सैकड़ों लोग लापता हो गए हैं। कितने बड़े इलाके को क्षति पहुंची है, इसका पता आने वाले एक-दो दिनों में ज्यादा बेहतर ढंग से चलेगा। इस हादसे के चलते अलकनंदा और धौली गंगा उफान पर हैं। पानी के तेज बहाव में मानव बस्तियों के बहने की आशंका है।

उत्तराखंड के चमोली जिले में हुए हादसे ने एक बार फिर सबको दहला दिया। 2013 का केदारनाथ हादसा अभी हमारी सामूहिक याददाश्त में धूमिल भी नहीं पड़ा है कि यह एक और घटना हो गई। हालांकि केदारनाथ हादसा आकार-प्रकार और भीषणता के मामले में इससे कहीं बड़ा था, लेकिन इस दुर्घटना ने एक बार फिर यह याद दिला दिया कि हिमालय के संवेदनशील इलाकों के घटनाक्रम को लेकर हम किस कदर अनजान, बल्कि उदासीन बने हुए हैं और इसके कितने खतरनाक नतीजे हमें भुगतने पड़ सकते हैं। अभी तक पुख्ता तौर पर यह भी स्पष्ट नहीं हो सका है कि रविवार सुबह हुए इस हादसे के पीछे आखिर वजह क्या थी। कहा जा रहा है कि यह ऊपरी क्षेत्र में आए एक ऐवलांच (हिमस्खलन) का परिणाम हो सकता है। दूसरी संभावना ग्लेशियर टूटने की बताई जा रही है। मगर दोनों ही स्थितियां अपने आप में इतनी तेजी से पानी नीचे आने का कारण नहीं बन सकतीं। जमी हुई बर्फ दरक कर अच्छी-खासी ठंड में आखिर इतनी जल्दी पिघल कैसे जाएगी? उत्तराखंड के चमोली जनपद स्थित ऋषिगंगा में ग्लेशियर खिसकने से बनी झील के टूटने से आई तबाही ने फिर इस संवेदनशील इलाके में मानवीय हस्तक्षेप के बाबत चेताया है। इस आपदा में जहां मानवीय

क्षति हुई, वहीं ऋषिगंगा हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट तबाह हो गया और एनटीपीसी के तपोवन हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट को भारी नुकसान पहुंचा है। केंद्र व राज्य सरकार की तात्कालिक सक्रियता के बाद शाम तक कुछ शव बरामद करने की बात आईटीबीपी के अधिकारियों ने कही है। वहीं तपोवन बांध के पास निर्माणाधीन टनल में फंसे बीस लोगों को निकालने के प्रयासों में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ व आईटीबीपी की टीम लगी हुई थी।

स्थानीय सड़कों की तबाही के साथ ही चीन सीमा को जोड़ने वाला एक पुल भी तबाह हुआ है। बहरहाल, तबाही के भयावह वीडियो वायरल होने के बाद उत्तराखंड में हरिद्वार से लेकर उत्तर प्रदेश के संवेदनशील जिलों में खासी सतर्कता बरती गई। अलकनंदा और गंगा तट पर रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया। कुंभ मेले की तैयारी में जुटा हरिद्वार का प्रशासन सकते में आ गया और तीर्थयात्रियों में भय व असुरक्षा देखी गई। बताया जा रहा है कि रैणी गांव के करीब ऋषिगंगा हाइड्रो

पावर प्रोजेक्ट में तकरीबन डेढ़ सौ श्रमिक काम कर रहे थे। जांच के बाद ही जीवित और मरने वालों की पुष्टि होगी। बहरहाल, नंदा देवी नेशनल पार्क के करीब हुए हादसे का सबक यह भी है कि संवेदनशील इलाकों में ऐसे निर्माण से बचा जाना चाहिए। बहरहाल, ऐसा नहीं है कि इस इलाके में ऐसी प्राकृतिक आपदा पहली बार आई है। ब्रिटिश काल में कई बड़ी ऐसी घटनाओं का उल्लेख मिलता है। लेकिन प्रकृति की संवेदनशीलता को नजरअंदाज करके हमने नदी विस्तार क्षेत्र में जो हाइड्रो प्रोजेक्ट बनाने शुरू किये, उससे पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ा है। कुछ समय पहले देहरादून स्थित प्रतिष्ठित वाडिया भू-वैज्ञानिक संस्थान के वैज्ञानिकों ने चेताया था कि जम्मू-कश्मीर के काराकोरम समेत संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियर नदियों के प्रवाह को रोक रहे हैं। इससे बनने वाली झीलों के टूटने से नदियों में तबाही आ सकती है। बीते जून-जुलाई में अध्ययन के बाद जारी रिपोर्ट में कहा गया था कि बर्फ से बनने वाली झील से तेज वेग से पानी नीचे की ओर बहकर रौद्र रूप धारण कर सकता है।?इस अध्ययन में ब्रिटिशकालीन दस्तावेजों का सहारा लिया गया था और इसमें क्षेत्रीय अध्ययन को शामिल किया गया था। इस अध्ययन में ऐसी डेढ़ सौ घटनाओं का जिक्र था, जिसमें हिमखंडों से बनी झीलों के टूटने का जिक्र था। रिपोर्ट में ग्लोबल वार्मिंग के चलते तेजी से पिघलते ग्लेशियरों का भी जिक्र था। ग्लेशियरों के ऊपरी हिस्सों से बर्फ तेजी से नीचे आती है और नदियों का मार्ग अवरुद्ध करती है। कालांतर ये झीलें टूटकर तबाही का सबब बनती हैं। ऐसे में इन संवेदनशील इलाकों में बांधों के निर्माण से परहेज करने की जरूरत है ताकि भविष्य में झील के फटने से पानी को निकलने को प्राकृतिक मार्ग मिल सके। जिन इलाकों पर असर पड़ सकता है, उन्हें खाली कराया जा रहा है। आने वाले दिनों में मौसम प्रतिकूल नहीं रहेगा, लेकिन जो हादसा हो चुका है, उसकी भरपाई कभी नहीं हो सकेगी। बड़ा सवाल है कि क्या मौसम विभाग ने इस हादसे की पूर्व सूचना दी थी। अगर ऐसे हादसों की पूर्व सूचना नहीं मिल सकती, तो फिर बचाव के उपाय क्या हैं? लोगों से सुरक्षित इलाकों में पहुंचने की अपील जारी है। इस आपदा में सौ से ज्यादा लोगों के मारे जाने की आशंका जताई जा रही है। प्रधानमंत्री अगर इस घटना की निगरानी कर रहे हैं, तो कोई आश्चर्य नहीं। सरकार की ओर से हर संभव मदद उन लोगों तक पहुंचनी चाहिए, जो इस हादसे से प्रभावित हैं। वैज्ञानिक इस हादसे की पड़ताल करेंगे, लेकिन इस

हादसे से जुड़ी कुछ बातें बहुत स्पष्ट हैं। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से ऐसे प्राकृतिक हादसों की आशंका पहले भी जताई गई थी, लेकिन यह अपने आप में अचरज की बात है कि जाड़े के मौसम में ग्लेशियर टूटा है। जब पहाड़ों पर कड़ाके की ठंड पड़ रही है, बर्फबारी का आलम है, तब ग्लेशियर का टूटना किसी गंभीर संकट का संकेत है। हमें इस दुखद घड़ी में फिर एक बार प्रकृति के साथ हो रहे खिलवाड़ पर विचार करना चाहिए। यह बार-बार कहा जाता रहा है कि धरती गर्म हो रही है। ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन हमें चुनौती दे रहा है। हिमालय को वैसे भी बहुत सुरक्षित पर्वतों में नहीं गिना जाता। पिछले दशकों में यहां ग्लेशियर तेजी से पिघलते चले जा रहे हैं। नदियों के अस्तित्व पर सवाल खड़े होने लगे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि ग्लेशियर को पिघलने से रोकने के लिए जितनी कोशिश होनी चाहिए, नहीं हो पा रही है। इतना ही नहीं, पहाड़ों पर उत्खनन और कटाई का सिलसिला लगातार जारी है। पहाड़ों पर लगातार निर्माण और मूलभूत ढांचे, जैसे सड़क, सुविधा निर्माण से खतरा बढ़ता चला जा रहा है। बहुत दुर्गम जगहों पर मकान-भवन निर्माण से जोखिम का बढ़ना तय है। जब पहाड़ों पर सुविधा बढ़ रही है, तब वहां रहने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। हमने मैदानों का परिवेश बिगाड़ दिया है, तो लोग पहाड़ों पर बसने को लालायित हैं। इसका असर पहाड़ों पर साफ तौर पर दिखने लगा है। जहां पहाड़ों पर हरियाली हुआ करती थी, वहां कंक्रीट के जंगल नजर आने लगे हैं, नतीजा सामने है। समय-समय पर पहाड़ और ग्लेशियर हमें रुलाने लगे हैं। इस हादसे के बाद हमें विशेष रूप से पहाड़ों और प्रकृति के बारे में ईमानदारी से सोचने की शुरुआत करनी चाहिए। पर्यावरण रक्षा के नाम पर दिखावा अब छोड़ देना चाहिए। ग्लेशियर को बचाने के लिए जमीन पर उतर कर काम करना होगा, तभी हम ऐसे प्राकृतिक, लेकिन दर्दनाक हादसों से बचे रहेंगे।

आत्मनिर्भर भारत पर केंद्रित रहा बजट

संसद में केंद्रीय बजट के जरिए अर्थव्यवस्था को बल देने की जो कोशिशें हुई हैं, उनका जमीनी असर न केवल योजनाओं और बजट के क्रियान्वयन, बल्कि सरकार के भावी निर्णयों पर निर्भर करेगा। जो प्रयास मूलभूत ढांचे में निवेश या उद्योग जगत को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए हैं, उनसे हम उम्मीद कर सकते हैं। बजट से भी जाहिर है, सरकार लोगों को मिल रही प्रत्यक्ष आर्थिक मदद के अभी तक के प्रयासों से संतुष्ट है और इसका बखान बजट में बखूबी हुआ है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट में आत्मनिर्भर भारत पर जोर दिया है, तो कोई आश्चर्य नहीं। कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए सरकार के 27.1 लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भर भारत पैकेज से संरचनात्मक सुधारों को बढ़ावा मिला है।

अब आम बजट में सरकार ने 64,180 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ आत्मनिर्भर स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखा है। स्वास्थ्य ढांचा मजबूत करना कितना जरूरी है, यह हमने कोरोना के समय अच्छी तरह समझ लिया है। इसके अलावा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भी जारी रहेगा। बहरहाल, जब सरकारी खजाना दबाव में है, तब आयकरदाताओं को वैसे भी राहत की ज्यादा उम्मीद नहीं थी। सरकार ने 75 साल या उससे अधिक उम्र के पेंशनभोगियों को कुछ राहत दी है। 135 करोड़ लोगों के देश में करीब छह करोड़ लोग आयकर रिटर्न दाखिल करते हैं, जबकि करीब तीन करोड़ लोग ही आयकर चुकाते हैं। मुश्किल समय में सरकार आयकर का दायरा बढ़ाने के लिए कुछ कर सकती थी। यह आयकर बढ़ाने का समय नहीं है, यह अन्य करों को बढ़ाने का भी समय नहीं है। ऐसे में, सरकार ने पेट्रोल पर 2.5 रुपये प्रति लीटर का अधिभार लगाया है, जबकि डीजल पर 4 रुपये। इससे पेट्रोल, डीजल की कीमतों को तीन अंकों में

जाने और बने रहने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा, मतलब महंगाई बढ़ेगी। मोबाइल उपकरण पर कस्टम ड्यूटी बढ़ेगी, लेकिन इसका लाभ तभी है, जब देशी कंपनियां स्वयं पर्याप्त उपकरण बनाने लगें, वरना आज के समय में मोबाइल फोन को महंगा करने की दिशा में कोई भी निर्णय अनुकूल नहीं है। जब भारत को निर्यात बढ़ाने के लिए ज्यादा प्रयत्न करने हैं, तब आयात बढ़ाने के छोटे-मोटे उपाय भले किसी निजी कंपनी या उपभोक्ता के लिए फायदेमंद हों, लेकिन हमें व्यापकता में देश की आत्मनिर्भरता बढ़ाने के बारे में ज्यादा सोचना चाहिए। सस्ते घर की सुविधा, डूबते कर्ज का प्रबंधन, सरकारी बैंकों को पूंजी देने का प्रस्ताव, उज्ज्वला योजना का विस्तार, रेल व बस सेवा विस्तार, किसानों को फसल लागत से डेढ़ गुना मूल्य देने का इरादा इत्यादि अनेक प्रशंसनीय कोशिशें हैं। हम समझ सकते हैं, विनिवेश से भी सरकार पैसे जुटाना चाहती है, यह पुराना एजेंडा है। पिछले बजट में 2.1 लाख करोड़ रुपये विनिवेश से जुटाने का अनुमान था और इस बार 1.75 लाख करोड़ रुपये जुटाने का इरादा है, लेकिन यह एक ऐसा मोर्चा है, जहां सरकार को राजनीति और अनेक अड़चनों का सामना करना पड़ेगा। ग्रामीण विकास, रोजगार और सामाजिक क्षेत्र में सरकार के खर्च का बढ़ना तय है, अत- सरकार को इस दौर में वित्तीय घाटे की चिंता ज्यादा नहीं करनी चाहिए। यह ज्यादा व सुनियोजित खर्च के साथ अर्थव्यवस्था में मांग और विकास की

कठिन दौर का बजट

जैसी अपेक्षा थी, कोरोना महामारी से संघर्ष के इस दौर में वित्त वर्ष 2021-22 का बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने स्वास्थ्य क्षेत्र को खास तवज्जो दी। हेल्थकेयर बजट 94,000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2.46 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है। हालांकि यह स्पष्ट होना बाकी है कि इस विशाल बजट राशि का इस्तेमाल किस तरह से और किन मदों में किया जाएगा। लेकिन यह बढ़ोतरी असाधारण है और इससे अंदाजा मिलता है कि सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र की जरूरतों को प्राथमिकता से ले रही है। जिस तरह की असामान्य चुनौतियों के बीच यह बजट आया है, उसमें स्वाभाविक है कि सरकार ने बजट संबंधी पारंपरिक मानदंडों और कसौटियों को कुछ समय के लिए दरकिनार कर दिया है। इसी का परिणाम है कि साल 2021 में वित्त घाटा 9.5 फीसदी रहने का अनुमान होने के बावजूद जल्द से जल्द इसको नीचे लाने से ज्यादा जरूरी यह माना गया कि सरकारी खर्च बढ़ाकर विकास की गति को तेज किया जाए। वित्तीय घाटे को कम करने का काम चरणबद्ध ढंग से करते हुए इसे साल 2025-26 तक चार फीसदी से नीचे लाने का लक्ष्य तय किया गया है और फिलहाल पूरा जोर इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के जरिए असेट क्रिएट करने तथा रोजगार पैदा करने पर रखा गया है।

नई स्वास्थ्य योजनाओं पर खर्च होगा 64180 करोड़ रुपये

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए सरकार के 27.1 लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भर भारत पैकेज से संरचनात्मक सुधारों को बढ़ावा मिला है। सीतारमण ने आम बजट में 64,180 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ आत्मनिर्भर स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा कि यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अतिरिक्त होगा। वित्त मंत्री ने यह भी कहा कि भारत में कोविड-19 के दो टीके हैं तथा दो अन्य टीकों की पेशकश जल्द की जाएगी। उन्होंने कहा कि सबसे गरीब तबके के लाभ के लिए सरकार ने अपने संसाधनों को बढ़ाया है।

शिक्षा क्षेत्र को भी दिया तोहफा

लेह में केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किया जाएगा। इसके साथ ही देशभर में 100 नए सैनिक स्कूल भी खोले जाएंगे। केंद्रीय वित्त मंत्री ने बजट में बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि देशभर में 15 हजार आदर्श स्कूल बनाए जाएंगे। सीतारमण ने घोषणा कि 758 स्कूल आदिवासी क्षेत्रों में खोले जाएंगे, जिससे की आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों को बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराई जा सके। ये स्कूल एकलव्य स्कूल होंगे। इससे आदिवासी छात्रों को बड़ी मदद मिल सकेगी। बजट भाषण में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देने और प्रभावी गुणवत्ता को दृष्टिगोचर करते हुए 15 हजार सरकारी स्कूलों का स्तर बढ़ाएगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के तहत हायर एजुकेशन कमीशन का गठन किया गया है। यह देश में उच्च शिक्षा का एकमात्र नियामक होगा। 2019 के बजट में नेशनल रिसर्च फाउंडेशन खोलने की घोषणा की गई थी। अब 2021-22 के बजट में इसके लिए अगले पांच साल के लिए 50 हजार करोड़ की व्यवस्था की जा रही है ताकि देशभर में अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सके।

कृषि क्षेत्र

बजट में किसानों और कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों को भी बड़ी सौगात दी गई है। सरकार का दावा है कि अगले वर्ष तक देश के किसानों की आय दुगनी हो जाएगी। वित्त मंत्री ने अपने भाषण में किसानों को उनकी लागत से डेढ़ गुना ज्यादा देने का प्रयास करने का एलान किया। देश में गेहूं उगाने वाले किसानों की संख्या दोगुनी हो गई है। गेहूं की एमएसपी डेढ़ गुना कर दी गई है और बीते सात वर्षों में किसानों से दोगुने से ज्यादा धान खरीदा गया है। उनसे सरकारी खरीद के प्रयास किए जा रहे हैं और उनके भुगतान में तेजी आई है। वित्त मंत्री ने कहा

कि मोदी सरकार की ओर से हर सेक्टर में किसानों को मदद मिल रही है। यूपीए सरकार से करीब तीन गुना राशि मोदी सरकार ने किसानों के खातों में पहुंचाई है। दाल, गेंहू, धान समेत अन्य फसलों की एमएसपी भी बढ़ाई गई है। वित्त मंत्री ने कहा कि धान खरीदारी पर 2013-14 में 63 हजार करोड़ रुपए खर्च हुए थे, जो बढ़कर एक लाख 45 हजार करोड़ रुपए हो चुका है। इस साल यह आंकड़ा एक लाख 72 हजार करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है।

रेल बजट पर खर्च होंगे 1.10 लाख करोड़ रुपये

वित्त मंत्री ने रेलवे को बड़ी सौगात देने की घोषणा की है। वित्त मंत्री ने साल 2030 तक तैयार होने वाली भारतीय रेल की नई योजनाओं के बारे में बताया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि इस साल रेल बजट पर 1.10 लाख करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इनमें से पूंजीगत व्यय के लिए 1.07 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। उन्होंने बताया कि साल 2023 तक देश की 100 फीसदी ट्रेनें बिजली से चलने लगेंगी। शहरों में मेट्रो ट्रेन सर्विस और सिटी बस सर्विस को बढ़ाने के भी प्रवाधान किए जा रहे हैं। वहीं रेलवे की प्रथमिकताओं पर भाषण देते हुए वित्त मंत्री ने ईस्टर्न और वेस्टर्न डीएफसी (डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर) के विस्तार की बात कही।

बैंकों में 20,000 करोड़ रुपये की पूंजी डालेगी सरकार

सरकार अगले वित्त वर्ष में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 20,000 करोड़ रुपये की पूंजी डालेगी। पूंजी के मिलन से इन बैंकों को पूंजी संबंधी नियामकीय शर्तों को पूरा करनें में आसानी होगी। चालू वित्त वर्ष में भी सरकार ने बैंकों के पुनःपूंजीकरण के लिए 20,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया था। वित्त वर्ष 2019-20 में सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 70,000 करोड़ रुपये की पूंजी डालने का प्रस्ताव किया था।

8,500 किलोमीटर की राजमार्ग परियोजनाएं

देश के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने पर जोर देते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि मार्च 2022 तक देश में 8,500 किलोमीटर की राजमार्ग परियोजनओं का आवंटन किया जाएगा। पश्चिम बंगाल को 25,000 करोड़ रुपये की राजमार्ग परियोजनाएं दी जाएंगी। केरल को 65,000 करोड़ रुपये और पश्चिम बंगाल को 25,000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं दी जाएंगी। उन्होंने असम को 3,400 करोड़ रुपये की सड़क परियोजनायें देने का भी एलान किया। शहरी क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन के लिए 18,000 करोड़ रुपये की योजना की भी घोषणा की गई।

गणतंत्र दिवस पर हिंसा

गणतंत्र दिवस का दिन प्रत्येक भारतीय के जीवन में बहुत गौरवशाली दिन होता है, लेकिन हमारे यहां इस दिन भी ओछी राजनीति करने वाले चंद राजनेताओं को चैन नहीं है, वो अपने क्षणिक स्वार्थ के लिए देश की आन-बान-शान व मानसम्मान से खिलवाड़ करने से भी बाज नहीं आ रहे है और सबसे बड़ी दुख की बात यह है कि हमारी सरकार व सिस्टम तमाशबीन बनकर चुप खड़े होकर तमाशा देख रहा है, गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में घटित घटनाएं इसका ताजा उदाहरण हैं। राष्ट्रीय महापर्व 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के दिन दिल्ली की सड़कों पर जमकर घमासान हुआ। किसानों की ट्रैक्टर परेड़ की आड़ में कुछ उपद्रवियों ने नियम-कायदे-कानूनों को ठेंगा दिखाकर जमकर हुड़दंग उतारा, संविधान प्रदत अभिव्यक्ति की आज़ादी का दुरुपयोग करके देश की छवि को विश्व में खराब करने का दुस्साहस किया।

हमारे देश के लचर सिस्टम, चंद राजनेताओं व ओछी राजनीति की वजह से राजधानी दिल्ली की सड़कों पर जो तांडव मचा वह कोई माफी योग्य आम घटना नहीं है, जिस तरह से किसानों की ट्रैक्टर परेड़ की आड़ लेकर कुछ आतंकी मानसिकता के देशद्रोही लोगों के द्वारा दिल्ली की सड़कों पर हिंसा का तांडव मचाया गया वह किसी भी दृष्टि उचित नहीं है और माफी योग्य अपराध नहीं है। जिस ढंग से कुछ देशद्रोही लोगों के द्वारा देश की आन-बान-शान लालकिले की प्राचीर पर 15 अगस्त के दिन प्रधानमंत्री के द्वारा तिरंगा फहराये जाने वाले पोल पर धर्म विशेष के संकेत वाला दूसरा ध्वज लहराया गया, वह बहुत ही शर्मनाक घटना है। लाल किले में घटित इस अक्षम्य अपराध की घटना ने सरकार व हमारे देश के सिस्टम की कार्यप्रणाली पर विश्व समुदाय के सामने प्रश्नचिन्ह लगाने का कार्य किया है, जब पुलिस के पास पहले से ही पुख्ता खुफिया सूचना थी कि किसान आंदोलन के दौरान दिल्ली में कोई अप्रिय घटना घट सकती है, फिर भी चंद राजनेताओं के हाथ में खेलती हमारे देश की सरकार व सरकारी सिस्टम क्या करता रहा, वो सड़कों पर खड़े होकर कुम्भकर्णी नींद में सोता रहकर तमाशा देखता रहा और देश विरोधी लोग अपना कार्य कर गये। चंद राजनीतिक लोगों के हाथ की कठपुतली बनी सुरक्षा एजेंसियों को समझना होगा कि लाल किला देश की एक ऐसी ऐतिहासिक इमारत है जहाँ दशकों से तिरंगा शान के साथ लहराता रहा है, वह किसी व्यक्ति के घर की आम बालकनी नहीं है कि जिसे जब मन आए वो उस पर चढ़कर अपनी मन पसंद का धार्मिक या राजनीतिक ध्वज फहरा दे। लापरवाही बरतने वाले देश के चंद राजनेताओं व पुलिस-प्रशासन को समझना होगा कि लाल किला हमारे लोकतंत्र की

सर्वोच्च मर्यादा के प्रतीकों में से एक है, उससे हर हाल में तथाकथित आन्दोलनकारियों को दूर रखना चाहिए था। क्योंकि इसकी मान मर्यादा की रक्षा के लिए माँ भारती के असंख्य वीर जांबाज सपूतों ने देश में व सीमाओं पर अपने बलिदान दिये हैं और आज भी दे रहे हैं, लेकिन उस जगह राजनीतिक नौटंकी की यह घटना बहुत ही दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। इस घटना ने साबित कर दिया है कि किसानों के भेष में छिपे हुए कुछ आतंकियों के लिए किसान आंदोलन तो मात्र एक बहाना है, उनका असली मक़सद देश के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाना है, जो प्रत्येक सच्चा देशभक्त भारतीय व सच्चा अन्नदाता किसान कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगा।वैसे इस घटना के बाद अन्नदाता किसानों का जो आंदोलन पिछले दो माह से देश में विभिन्न जगहों पर शांतिपूर्ण ढंग से आम जनमानस के जबरदस्त सहयोग से चल रहा था, उसको अब बहुत बड़ा झटका लगना तय है, 26 जनवरी की घटना ने किसानों के बेहद मजबूत आंदोलन को एक क्षण में ही कमजोर करने का कार्य कर दिया है और भविष्य में उसको मिलने वाले अथाह जनसमर्थन को बहुत बड़ा झटका दे दिया है। दिल्ली में जिस तरह से किसान आंदोलन के नाम पर चंद गुंडों के द्वारा पत्थरबाजी करके हिंसा की गयी, गुंडों ने नियमों-कायदों को ठेंगा दिखाया, पुलिस के द्वारा तय मार्ग का पालन न करते हुए दिल्ली के माहौल को खराब करने के लिए पुलिसकर्मियों और मीडियाकर्मियों पर पत्थरबाजी की गयी व उनसे मारपीट की गयी, वह घटना बेहद निंदनीय है। वैसे भी सरकार व किसान दोनों पक्षों को समझना चाहिए कि इतिहास गवाह है कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान प्रदान नहीं करती है, वह मसले को बिगाड़ने का काम करती है, लेकिन सरकार को भी सोचना चाहिए कि हठधर्मिता का लोकतंत्र में कोई स्थान नहीं है, सरकार का काम हठधर्मिता त्याग कर जनहित के कार्य करना है, ठीक उसी प्रकार किसी भी सफल आंदोलन में हिंसा का भी कोई स्थान नहीं होता है।

हर्षोल्लास के साथ मनी गौरवशाली गणतंत्र की 72 वीं वर्षगाँठ

72 वें गणतंत्र दिवस पर दिल्ली के राजपथ पर परेड निकली। परेड से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेशनल वॉर मेमोरियल जाकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर उनके साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और तीनों सेनाओं के अध्यक्ष भी रहे। इसके बाद उन्होंने राजपथ पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का स्वागत किया। राजपथ पर भारत ने परेड के जरिए दुनिया को अपनी शक्ति की झलक दिखाई। अलग-अलग राज्यों की झांकियों के जरिए विभिन्नता में एकता की झलक दिखी। भारतीय सेना की तरफ से कैप्टन प्रीति चौधरी अकेली ऐसी अधिकारी रहीं जिन्होंने इस साल परेड में हिस्सा लिया। इसके अलावा बांग्लादेश की सैन्य टुकड़ी ने राजपथ पर मार्च किया। वहीं आसमान में राफेल लड़ाकू विमान की गर्जना से परेड की समाप्ति हुई। वहीं मप्र में प्रदेश में 72वाँ गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास एवं राष्ट्रभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। जिला मुख्यालयों पर आयोजित कार्यक्रमों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। साथ ही आकर्षक परेड के साथ देशभक्ति से परिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आकर्षक प्रस्तुति भी हुई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का प्रदेश की जनता के नाम संदेश का वाचन भी किया गया। विभिन्न विभागों की विकास आधारित झांकियाँ भी निकाली गई। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया। ग्वालियर जिले में गौरवशाली गणतंत्र की 71वीं वर्षगाँठ उत्साह, उमंग, हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाई गई। यहाँ कम्पू स्थित एस.ए.एफ ग्राउंड पर आयोजित हुये गरिमामयी मुख्य समारोह में ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और संयुक्त परेड की सलामी ली। 72वें गणतंत्र दिवस पर आयोजित हुए मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने प्रात: 9 बजे ध्वजारोहण किया। इसके बाद उन्होंने कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह व पुलिस अधीक्षक अमित सांघी के साथ खुली जीप में सवार होकर संयुक्त परेड का निरीक्षण किया। श्री तोमर ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन भी किया। संयुक्त परेड में शामिल जवानों ने हर्ष फायर किये और राष्ट्रपति के जयकारे लगाये। मंत्री श्री तोमर ने 72वे गणतंत्र दिवस की सभी जिलेवासियों को बधाई दी। मुख्य अतिथि ने शांति और खुशहाली के प्रतीक हरे, सफेद व केसरिया रंग के गुब्बारे आसमान में छोड़े। विभिन्न विभागों द्वारा निकाली गईं शासकीय योजनाओं पर केन्द्रित झाँकियां भी आकर्षण का केन्द्र रहीं।

आत्म-निर्भर म.प्र. में कृषि क्षेत्र की होगी महत्वपूर्ण भागीदारी

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश के किसानों के हित में खेती को लाभप्रद बनाने और किसानों की आय दोगुनी करने के लिये अनेक नवाचार किये हैं। आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भागीदारी होगी। कृषि उत्पादन को बढ़ाना, उत्पादन की लागत को कम करना, कृषि उपज के उचित दाम दिलाना और प्राकृतिक आपदा या अन्य स्थिति में उपज को हुए नुकसान में किसान को पर्याप्त क्षतिपूर्ति देना, सरकार के प्रयासों में शामिल हैं।

प्रदेश के किसानों को सरकार से मिल रहे संबल से किसानों ने प्रमुख रूप से गेहूँ उत्पादन में रिकार्ड कायम किया। मध्यप्रदेश गेहूँ उपार्जन में पूरे देश में अव्वल रहा। किसानों के हित में कृषि उपज मंडी अधिनियम में संशोधन करते हुए ई-ट्रेडिंग का प्रावधान किया गया और किसानों को उपार्जन केन्द्र के साथ ही मंडी के अधिकृत निजी खरीदी केन्द्र और सौदा-पत्रक व्यवस्था के माध्यम से भी फसल बेचने की सुविधा प्रदान की गई। गेहूँ, धान एवं अन्य फसलों के उपार्जन की 33 हजार करोड़ रूपये से अधिक की राशि किसानों के खातों में अंतरित की गई। प्रधानमंत्री किसान सम्माननिधि का लाभ मध्यप्रदेश के किसानों को मिल रहा है, जिसके अंतर्गत प्रतिवर्ष किसानों को 6-6 हजार रूपये दिए जाते हैं। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री किसान कल्याण सम्मान निधि योजना की शुरूआत कर किसानों को मध्यप्रदेश शासन की ओर से प्रतिवर्ष 4 हजार रूपये दो बराबर किश्तों में दिये जाना शुरू किया गया। इस प्रकार किसानों को अब कुल 10 हजार रूपये प्रतिवर्ष किसान सम्माननिधि मिल रही है।

प्राकृतिक आपदा या किसी अन्य परिस्थिति में किसान की उपज को हुए नुकसान में राहत पहुँचाने वाली प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लंबित प्रीमियम जमा कर प्रदेश सरकार ने किसानों को राहत पहुँचाई। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सत्ता में आते ही बीमा योजना का लंबित प्रीमियम भरा और प्रभावित किसानों को फसल बीमा राशि दिलवाई गई। लॉकडाउन की विकट स्थिति में एक करोड़ 29 लाख टन गेहूँ 16 लाख किसानों से खरीद कर उनके खातों में 27 हजार करोड़ से अधिक की राशि अंतरित की गई।किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण योजना को पुन- चालू करते हुए किसानों को राहत पहुँचाई गई। इसके लिये सहकारी बैंकों को 800 करोड़ रूपये की राशि भी उपलब्ध करवाई गई, जिससे सहकारी बैंक किसानों को आसानी से कृषि ऋण उपलब्ध करवा सकें।

किसानों की आय को बढ़ाने के लिये बेहतर प्रबंधन और सिंचाई परियोजनाओं पर कार्य किया गया। प्रदेश में अधिक से अधिक क्षेत्र में सिंचाई की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। वर्ष 2020 तक लगभग 40 लाख 27 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधाएँ विकसित की गई। प्रदेश में 19 वृहद, 97 मध्यम और 5344 लघु सिंचाई योजनाओं का कार्य पूर्ण किया गया। इसके साथ ही 27 वृहद, 47 मध्यम और 287 लघु सिंचाई योजनाएँ प्रगति

पर हैं। प्रदेश में अगले 5 वर्षों में 65 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना अंतर्गत मंडला, डिंडौरी, शहडोल, उमरिया एवं सिंगरौली जिलों में 1707 करोड़ की लागत से 24 हजार 364 भू-जल संरचनाओं का निर्माण कर सीमांत एवं लघु किसानों की 62 हजार 133 हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित की गई।

कोरोना काल में पंचायत एवं ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं में 57 हजार 653 जल- संरचनाओं का निर्माण किया गया। इन जल संरचनाओं में रोजगार गारंटी योजनान्तर्गत 1835 करोड़ से अधिक लागत के 1007 स्टॉपडेम, 4467 चेक डेम, 19 हजार कपिल धारा कूप, 2588 सार्वजनिक कूप, 1667 पर्कोलेशन टैंक, 14 हजार 907 हितग्राही मूलक खेत, 2365 सामुदयिक खेत तालाब तथा 4393 नवीन ताबाब बनवाए गए। साथ ही 3115 बावड़ी, तालाब और सामुदायिक जल-संरचनाओं का जीर्णोद्धार तथा सामुदायिक टांका निर्माण सहित 53 हजार 517 जल-संरचनाओं के कार्य किये गये। इसी प्रकार प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में 237 करोड़ की लागत से 2697 खेत तालाब, 726 तालाब, 305 परकोलेशन तालाब, 299 चेकडेम, स्टॉप डेम और 109 नाला बंधान के कार्य किये गये। इन सभी जल संरचनाओं से जहाँ एक ओर स्थानीय लोगों को कोरोना काल में रोजगार मिला, वहीं भू-जल स्तर में बढ़ोत्तरी के साथ किसानों को खेती में सिंचाई के लिये पानी भी मिल रहा है। प्रदेश सरकार द्वारा विगत कई वर्षों से सिंचाई बजट में निरंतर वृद्धि भी की जा रही है। हाल ही में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्रि-परिषद की बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए राजस्व पुस्तक परिपत्र में नये प्रावधान जोड़े हैं। इन प्रावधानो में प्राकृतिक प्रकोप, आग लगने तथा वन्य प्राणियों द्वारा मकान नष्ट किये जाने पर आर्थिक सहायता का प्रावधान किया गया है। इन नये प्रावधानों से प्रदेश के किसानों को भी लाभ मिलेगा। किसानों को कृषि कार्य के लिये फ्लैट दरों पर बिजली दी जा रही है, जिसमें 22 लाख कृषि उपभोक्ता लाभान्वित हुए हैं। किसानों को खेती के लिये बिजली कनेक्शनों पर 14 हजार 244 करोड़ रूपये का अनुदान दिया गया।

कृषि अधोसंरचना विकास फंड में मध्यप्रदेश देश में सबसे आगे है। अधोसंरचना विकास के लिये आत्म-निर्भर कृषि मिशन का गठन किया गया है। पिछले 10 माह में कृषि विकास एवं किसान-कल्याण के लिये विभिन्न योजनाओं पर 83 हजार करोड़ रूपये से अधिक के हितलाभ दिये गये हैं। किसानों के हित में मंड़ी नियमों में ऐतिहासिक सुधार भी किया गया हैं। मंडी टेक्स 1.50 प्रतिशत से घटाकर 0.50 प्रतिशत किया गया। कृषि की लागत कम करने, उपादन बढ़ाने तथा उपज का सही दाम किसानों के दिलाने के लिए कृषि उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) को मजबूत किया जा रहा है। आगामी वर्षों मे एक हजार नये कृषि उत्पादक संगठनों का गठन किया जाएगा।सरकार द्वारा किसानों के हित में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए फसल नुकसानी पर न्यूनतम मुआवजा राशि 5 हजार रूपये की गई है। इस संबंध में राजस्व पुस्तक परिपत्र में संशोधन भी किया गया है। प्रदेश के किसानों को उत्तम गुणवत्ता के खाद-बीज उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस वर्ष किसानों को पर्याप्त खाद उपलब्ध कराए जाने के बाद यूरिया का सरप्लस भण्डारण रहा। नकली खाद-बीज बेचने वालों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई करते हुए उनके लाइसेंस निलंबित और निरस्त भी किए।

उज्जैन में बीजेपी विधायकों के प्रशिक्षण वर्ग में मुख्यमंत्री शिवराज व ज्योतिरादित्य समेत कई नेता हुए शामिल

उज्जैन में बीजेपी विधायकों की पाठशाला

उज्जैन में भाजपा विधायकों के प्रशिक्षण वर्ग में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, ज्योतिरादित्य सिंधिया, नरोत्तम मिश्र, प्रहलाद पटेल, ओमप्रकाश धुर्वे,फग्गन सिंह कुलस्ते, पंकजा मुंडे ने दीप प्रज्जवलित कर प्रशिक्षण वर्ग का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा कि कार्यकर्ता लालटेन की तरह होते हैं। कई बार लालटेन की कांच पर धूल जम जाती है, जिसके कारण उसका प्रकाश मंद्धम पड़ जाता है। कांच साफ करते ही प्रकाश फैलने लगता है। ठीक इसी तरह प्रशिक्षण वर्ग में कार्यकर्ताओं के विजन को साफ किया जाता है।

मध्यप्रदेश का भाजपा संगठन देश का रोड मॉडल बने, कार्यकर्ताओं के मन के भाव को जानें और उन्हें आत्मसात करें, गरीबों की कल्याणकारी योजनाओं को सुदूर गांव के अंतिम पायदान तक पहुंचाएं। राष्ट्र विरोधी ताकतों को पहचानें, सत्ता और संगठन के बीच समन्वय बनाए रखने में सहयोग करें। विपक्षी दलों के झूठ को बेनकाब करें। इसी संकल्प के साथ मध्यप्रदेश भाजपा के विधायकों का दो दिन का प्रशिक्षण वर्ग मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के संबोधन के साथ समाप्त हो गया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह कार्यक्रम से निकलने के

बाद विधायक व पूर्व मंत्री पारसचंद जैन के घर गए। उद्घाटन सत्र से पहले मुख्यमंत्री ने उज्जैन विकास गाथा प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रशिक्षण वर्ग का दूसरा सत्र चार बजे शुरू हुआ। यह पांच बजे तक चलेगा। इस सत्र को प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने संबोधित किया। इससे पहले प्रथम सत्र को सुहास भगत और ज्योतिरादित्य ने संबोधित किया। यह सत्र दोपहर 2.30 बजे से 3.30 बजे तक चला। विषय था, जनप्रतिनिधियों और संगठन के साथ समन्वय बनाना। इस सत्र की अध्यक्षता प्रहलाद पटेल और मंच का संचालन भगवानदास सबनानी ने की। इधर, सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने प्रशिक्षण शिविर में जाने से पहले बाबा महाकाल के गर्भगृह के बाहर से ही दर्शन किए। उन्होंने कहा हम सभी जनसेवक हैं। हमारा दायित्व है कि हम सभी जनता से जुड़े रहें। दिल्ली के पास चल रहे किसान आंदोलन को लेकर सिंधिया ने स्पष्ट किया कि कानून किसानों के हित में हैं। मैंने अपना मत संसद के पटल पर रखा है। किसानों को राजनीतिक आजादी तो मिल गई थी लेकिन आर्थिक आजादी इन कानूनों के माध्यम से दी गई है। यह 70 वर्षों में पहली बार हुआ है। इन कानूनों से किसानों को उनका हक देने की कोशिश की गई है। वो अपनी उपज कहीं भी बेच सकते हैं। किसी से भी कांट्रेक्ट कर सकते हैं। इससे पहले उन्होंने कहा कि महाकाल मंदिर के साथ सिंधिया राजघराने की पुरानी भावनाएं जुड़ी हैं। उन्होंने बताया कि वित्त आयोग से मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए 75 करोड़ की मांग की थी जिसे आम बजट में शामिल कर लिया गया है।

राजस्थान में किसानों के ट्रैक्टर मार्च में शामिल हुए राहुल गांधी, बोले

कानून रद्द हुए बगैर नहीं होगी सरकार से बात

राहुल गांधी ने राजस्थान दौरे की शुरुआत में अपनी पहली सभा पीलीबंगा में की। यहां उन्होंने कृषि कानूनों के खिलाफ वन-टू का फोर पॉलिटिक्स से मोदी सरकार को घेरा। सबसे पहले उन्होंने कृषि कानून लागू होने पर देश में खेती का धंधा एक व्यक्ति के हाथ में चले जाने के खतरे के बारे में बताया। फिर, एक दिन पहले लोकसभा में भाषण के दौरान बताए नारे 'हम-दो, हमारे दो' के जरिए सरकार और उद्योगपतियों पर निशाना साधा। पीलीबंगा में राहुल की सभा के दौरान अशोक गहलोत, अजय माकन, गोविंदसिंह डोटासरा मंच पर थे, लेकिन सबकी निगाहें सचिन पायलट पर थीं। पायलट से डिप्टी ष्टरू और प्रदेशाध्यक्ष का पद छूटने का असर उनके कद पर भी दिखा। राजस्थान में राहुल गांधी के बाएं रहने वाले पायलट को इस बार फ्रंटलाइन से साइडलाइन कर दिया गया। इसका कारण पद का प्रोटोकॉल बताया जा रहा है। गहलोत मंच पर राहुल के बगल में दाईं ओर थे, जबकि बाईं ओर प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा, माकन बैठे। इनके बाद चौथे नंबर पर पायलट को खाट पर बैठाया गया।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने केंद्रीय कृषि कानूनों को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर एक बार फिर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि वह देश की चालीस फीसदी जनता के व्यापार (कृषि) को अपने दो मित्रों के हवाले करना चाहते हैं। राहुल गांधी राजस्थान के अपने दौरे के दूसरे दिन अजमेर के पास रूपनगढ़ में किसानों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने तीन केंद्रीय कृषि कानूनों का जिक्र करते हुए कहा कि हिंदुस्तान का सबसे बड़ा व्यापार कृषि का है। उन्होंने कहा कि कानून रद्द किए बगैर अब सरकार से बात नहीं होगी राहुल ने कहा कि कृषि 40 लाख करोड़ रुपये का व्यापार है। दुनिया का सबसे बड़ा व्यापार है और यह किसी एक व्यक्ति का हिंदुस्तान का है वह सिर्फ दो लोगों के हाथ में चला जाएगा। कांग्रेस नेता ने कहा, ''लेकिन किसान कह रहा है कि हम मर जाएंगे लेकिन हम ये नहीं होने देंगे,

व्यापार नहीं है। कृषि का व्यापार हिंदुस्तान के 40 फीसदी लोगों का व्यापार है। इसमें किसान, छोटे व्यापारी, मजदूर सब भागीदार हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चाहते हैं कि यह पूरा का पूरा व्यापार उनके दो मित्रों के हवाले हो जाए। इन कृषि कानूनों का यही लक्ष्य है। मोदी जी चाहते हैं कि जो आपका है जो 40 फीसदी कभी नहीं होने देंगे। ट्रालियों को जोड़कर बनाए गए मंच से किसानों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यह मत सोचिए कि सिर्फ किसान बोल रहा है। किसान के पीछे मजदूर है, मजदूर के साथ छोटा व्यापारी खड़ा है। अगर ये कानून लागू हो गए तो इसका नकसाान सिर्फ किसानों को नहीं होगा। सबके सब बेरोजगार हो जाएंगे।

जल संरक्षण, बिजली बचाओ एवं स्वच्छ ग्वालियर के उद्देश्य को लेकर ऊर्जा मंत्री तोमर ने निकाली पदयात्रा

शहर हम सभी का है इसको स्वच्छ, सुंदर व भयमुक्त वातारवण बनाने की जिम्मेदारी हम सभी की है। सभी अपनी अपनी जिम्मेदारी से कार्य करें तो हम अपने शहर को स्वच्छता में प्रथम स्थान पर ला सकते हैं। साथ ही हमारे नौनिहालों को भी कई बीमारियों से बचा पायेगें। इसीलिए हमें स्वच्छता को अपनी आदत बनाना होगा। यह अपील ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने ग्वालियर विधानसभा में स्वच्छता, पानी व बिजली बचाओं के लिए निकाली गई दो दिवसीय पदयात्रा में आमजन से की।

मंत्री श्री प्रद्युमन सिंह तोमर द्वारा शनिवार को पदयात्रा का शुभारंभ सार्वजनिक धर्मशाला घासमंडी से किया गया। पदयात्रा के दौरान बडी संख्या में क्षेत्र के नागरिकगणों ने उत्साह से भाग लिया। पदयात्रा का समापन हलवाट

खाना पर किया गया। साथ ही पदयात्रा में सभी विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे और आमजन की समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया गया। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने स्वच्छता का संदेश देते हुए चाट का ठेला लगाने वाले, सबजी का ठेला लगाने वाले, चाय की दुकान, समोसे की दुकान लगाने वालों को डस्टबिन देते हुए कहा कि यह शहर हम सभी का है इसको स्वच्छ व साफ रखने की जिम्मेदारी भी हम सभी की है।

जमुना बाई के हाथ से खाया खाना

सडक पर बैठकर सुनी आमजन की समस्यायें

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर द्वारा निकाली जा रही पदयात्रा बंडाघूरा पंहुचने पर क्षेत्र की महिलायें व पुरूष बडी संख्या में मंत्री श्री तोमर के पास अपनी अपनी समस्या लेकर सडक पर बैठे थे, उनको देखकर मंत्री श्री तोमर भी उनकी समस्या सुनने के लिए सडक पर ही बैठ गए। सभी की समस्या सडक पर बैठकर ही सुनी तथा साथ में चल रहे अधिकारियों को निर्देशित किया कि यह सब मेरे परिवार के सदस्य हैं इनकी समस्या का निराकरण तुरंत किया जाये।

ऊर्जा श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर द्वारा स्वच्छता के प्रति जनजागृति के लिए निकाली जा रही पदयात्रा जैसे ही मंशा देवी वाली गली में पहुंची वैसे मंत्री श्री तोमर ने जमुना बाई से कहा माई में पदयात्रा में सुबह से चल रहा हूँ, भूख लगी है, कुछ बनाया हो तो खिला दो। इस पर जमुना बाई आलू मैथी की सबजी व रोटियां लेकर आई और अपने हाथों से मंत्री श्री तोमर को खाना खिलाया। इसके बाद मंत्री श्री तोमर ने जमुना बाई की समस्या सुनकर अधिकारियों को निर्देशित किया की इनकी पेंशन और क्षेत्र में पानी की समस्या का निदान 5 दिन में किया जाये।

भारतीय दर्शकों को लुभा रहा ओटीटी प्लेटफॉर्म

सिनेमाघरों के फुल कैपेसिटी पर खुल जाने के बावजूद ओटीटी पर आ रही फिल्मों का क्रम बना हुआ है। निर्माता-निर्देशक अभी तक असमंजस और अनिश्चय की स्थिति में फिल्मों की रिलीज की प्लानिंग ठीक से नहीं कर पा रहे हैं। अचानक पता चलता है कि अमुक फिल्म अगले हफ्ते या अगले महीने रिलीज हो रही है। रिलीज से कुछ हफ्तों पहले ही मालूम हो पाता है कि फिल्में ओटीटी पर आएंगी या थिएटर में रिलीज होंगी। सिनेमाघरों में फिल्मों की रिलीज की अनिश्चितता के बीच ओटीटी एक बेहतर और मजबूत विकल्प के रूप दृढ़ होता जा रहा है।

महीनों की बंदी के बाद तमाम एहतियातों के साथ थिएटर खुले तो रिलीज हुई फिल्मों को अपेक्षा के अनुरूप दर्शक नहीं मिले। हां, सामान्य दिनों में जिन छोटी फिल्मों को थिएटर नहीं मिल पाते, उन्हें प्रदर्शन का मौका जरूर मिल गया। लोकप्रिय सितारों की बड़ी फिल्में थिएटर में नहीं आईं। उनके निर्माताओं ने अपेक्षित कारोबार के लिए इंतजार करना बेहतर समझा। इस दरमियान अंग्रेजी फिल्म 'वंडर वुमन' और तमिल की कुछ फिल्मों ने जरूर थिएटर मालिकों का उत्साह बढ़ाया। पोंगल के अवसर पर 13 जनवरी को रिलीज हुई विजय दलपति और विजय सेतुपति की फिल्म 'मास्टर' ने भी अपेक्षित कारोबार से निर्माता-निर्देशकों और थिएटर मालिकों को भरोसा दिलाया। रिलीज के दो हफ्तों के अंदर ही इस फिल्म के ओटीटी पर आने की घोषणा हुई तो थिएटर मालिकों की बेचैनी बढ़ गई लेकिन उनके आग्रह और दबाव का कोई असर नहीं हुआ। यह फिल्म 29 जनवरी को ओटीटी प्लैटफॉर्म पर आ गई। अभी तक परस्पर समझदारी रही है कि थिएटर में रिलीज होने के चार हफ्तों के बाद ही कोई फिल्म ओटीटी या किसी और ऑनलाइन प्लैटफॉर्म पर प्रदर्शित की जाए। नए परिवेश में निर्माता-निर्देशक दलील दे रहे हैं कि थिएटर में दर्शकों की नगण्य मौजूदगी को ध्यान में रखते हुए फिल्म को सिनेमाहॉल और ओटीटी पर एक साथ रिलीज करना गलत नहीं है। कहा जा सकता है कि जल्दी ही ओटीटी और थिएटर में फिल्मों की एक साथ रिलीज 'न्यू नॉर्मल' के तौर पर स्वीकार कर ली जाएगी। थिएटर में फिल्मों और दर्शकों की आमद बढ़ने के तत्काल कोई आसार नहीं दिख रहे। दरअसल, बड़े निर्माता और आम दर्शक सिनेमाघरों में जाकर जोखिम लेने को तैयार नहीं हैं। वैक्सीन आ चुकी है और टीकाकरण की मुहिम चल रही है, लेकिन आम दर्शकों तक टीका पहुंचने में अभी वक्त लगेगा। बाजार में नागरिकों की गहमागहमी और सार्वजनिक वाहनों में बढ़ती लोगों की भीड़ से यह कयास लगाना उचित नहीं है कि लोग सिनेमाघरों में भी आ जाएंगे। यातायात, बाजार और सिनेमाघर में फर्क है। सिनेमाघरों में बंद माहौल में दो-तीन घंटे बिताने पड़ते हैं, जबकि

बाजार और वाहनों में आप अपनी मर्जी से रुक और निकल सकते हैं। दूसरे, यह भी ध्यान में रखना होगा कि बाजार और वाहन जीवन की दैनंदिन जरूरतें है, जबकि फिल्में कहीं और (ओटीटी और ऑनलाइन पर) भी देखी जा सकती हैं। बड़ी फिल्मों में केवल सलमान खान ने अपनी फिल्म 'राधे - योर मोस्ट वांटेड भाई' की थिएटर रिलीज का ऐलान किया है। यह फिल्म ईद के मौके पर रिलीज हो रही है। पहले 2020 की ईद में इसकी रिलीज होनी थी। सलमान खान बड़ी पूंजी वाले निर्माता हैं। वे तैयार फिल्म की रिलीज के लिए एक साल इंतजार कर सकते हैं। '83' और 'सूर्यवंशी' के निर्माता भी सही वक्त का इंतजार कर सकते हैं। लेकिन 'गुलाबो सिताबो' जैसी फिल्मों के छोटे निर्माताओं के लिए ऐसा करना मुमकिन नहीं था। बहरहाल, ओटीटी और फिल्म निर्माताओं के बीच कारोबार के नए समीकरण बन रहे हैं। अगर कोई फिल्म सीधे ओटीटी प्लैटफॉर्म पर आ रही है तो उसकी ऊंची रकम भी मिल रही है। अभी तक यह रकम फिल्मों के फेस वैल्यू (निर्माता, निर्देशक और स्टार आदि) से तय की जा रही थी। जल्दी ही फिल्म की गुणवत्ता, कार्यक्रम अधिशासी की व्यक्तिगत पसंद-नापसंद और फिल्म कलाकारों के पिछले परफॉर्मेंस के आधार पर रकम तय होने लगेगी। बॉक्स ऑफिस की गैरमौजूदगी में हिंदी फिल्मों का स्टार सिस्टम दरक चुका है। 'न्यू नॉर्मल' में लोकप्रियता का एकमात्र पैमाना बॉक्स ऑफिस नहीं रह जाएगा। आम दर्शकों के बीच ओटीटी की प्रबलता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि थिएटरों के खुलने के बावजूद नई फिल्मों की ओटीटी रिलीज की घोषणाएं जारी हैं। राम माधवानी निर्देशित कार्तिक आर्यन की 'धमाका' की ताजा डील ने स्पष्ट कर दिया है कि निर्माता निश्चित कमाई के लिए ओटीटी का उपयोग करते रहेंगे। जॉन अब्राहम की 'मुंबई सागा', परिणीति चोपड़ा की 'गर्ल ऑन द ट्रेन' और सानिया मल्होत्रा की 'पगलेट' ओटीटी पर आ रही हैं। कह सकते हैं कि इन कलाकारों की लोकप्रियता कथित बड़े स्टारों के मुकाबले कम है, लेकिन इस बदलती प्रवृत्ति पर और ज्यादा गौर करने की जरूरत है। खबर यह भी है कि ओटीटी प्लैटफॉर्म खुद के लिए ओरिजिनल कंटेंट के मद में निवेश कर रहे हैं। वेब सीरीज की तरह वे फिल्मों के निर्माण में भी रुचि दिखा रहे हैं। ओटीटी प्लैटफॉर्म हिंदी समेत अन्य भाषाओं की फिल्में देखने की सुविधा भी दे रहे हैं। हाल ही में मलयाली ओटीटी प्लैटफॉर्म पर रिलीज हुई 'द ग्रेट इंडियन किचन' ने हिंदी दर्शकों के बीच अच्छी पैठ बनाई। सिर्फ इस फिल्म को देखने के लिए दर्शकों ने मलयाली ओटीटी प्लैटफॉर्म के सब्सक्रिप्शन लिए। ओटीटी प्लैटफॉर्म्स पर इतनी फिल्में उपलब्ध रहती हैं कि सब्सक्रिप्शन ले चुके दर्शक वहीं विचरण करते रहते हैं। यही वजह है कि पिछले 10 महीनों में सभी ओटीटी प्लैटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन बढ़े हैं। दर्शकों के लिए तो ओटीटी प्लैटफॉर्म्स सुविधाजनक हैं ही, छोटे, मझोले और प्रयोगशील निर्माता निर्देशकों के लिए भी ये वरदान साबित हो रहे हैं। उनकी फिल्में दर्शकों के बीच आसानी से पहुंच रही हैं और दर्शक भी उन्हें देख रहे हैं। हाल ही में चैतन्य तम्हाने की बहुचर्चित पुरस्कृत फिल्म 'डिसायपल' ओटीटी पर आने की घोषणा हुई है। निश्चित ही ऐसे निर्माताओं के लिए ओटीटी प्लैटफॉर्म एक सार्थक विकल्प है। संकेत ऐसे मिल रहे हैं कि भविष्य में माहौल बिल्कुल सामान्य हो जाने के बाद भी ओटीटी और थिएटर का सहअस्तित्व बना रहेगा।

प्रदेश में बेटियों के विकास की राह में नहीं आने दी जाएगी कोई बाधा

बेटियों की सुरक्षा, जागरूकता, पोषण, ज्ञान और स्वास्थ्य का अनूठा अभियान है पंख

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि बेटियों की सुरक्षा (प्रोटेक्शन), जागरूकता (अवेयरनेस), पोषण (न्यूट्रीशन), ज्ञान (नॉलेज) तथा स्वास्थ्य (हेल्थ) का अनूठा अभियान है पंख। मध्यप्रदेश में बेटियों और महिलाओं के विकास की राह की सभी बाधाओं को दूर किया जाएगा। बेटियां आकाश से आगे जाकर अंतरिक्ष तक उड़ान भरें, इसके लिए पूरी ताकत से पंख अभियान का संचालन मिशन मोड पर किया जाएगा। बेटियों के साथ अपराध करने वाले तत्वों को सरकार ऋश कर देगी। ऐसे अपराधियों की सम्पत्ति नष्ट कर दी जाएगी। सजा भी ऐसी देंगे कि जमाना याद करेगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान आज राष्ट्रीय बालिका दिवस पर मिंटो हाल में %पंख% अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिशु के कोख में आने से लेकर मृत्यु के बाद तक परिवार की सहायता के लिए मध्यप्रदेश में अनेक योजनाएं चल रही हैं। सभी योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं के चेहरे पर मुस्कान लाना है। यह हम सभी का दायित्व भी है। कार्यक्रम का प्रारंभ मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा बेटियों के पूजन से हुआ। कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री डॉ प्रभुराम चौधरी भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर विदिशा की एक महिला द्वारा अपने पति के अन्याय के विरूद्ध खड़े होकर उसे कारावास भिजवाने का साहस किए जाने पर बधाई भी दी। इस प्रकरण में पिता द्वारा बेटी के साथ दुराचार किया गया था। पति को सजा के साथ ही महिला को आर्थिक सहायता भी दिलवाई गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसा साहस अन्य महिलाओं को भी दिखाना चाहिए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि सार्वजनिक जीवन में कार्य के प्रारंभ के साथ ही उन्होंने बालिका और महिला कल्याण को प्राथमिकता दी है। वर्ष 1990 में विधायक बनने के बाद और वर्ष 1991 से सांसद के रूप में मित्रों के सहयोग से अभावग्रस्त कन्याओं के विवाह के लिए सहायता देने का कार्य शुरू किया था। वर्ष 2005 में मुख्यमंत्री बनने के बाद मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, गांव की बेटी योजना के क्रियान्वयन पर फोकस किया। आज सुखद अनुभव हो रहा है जब इतनी बड़ी संख्या में लाड़ली लक्ष्मी योजना का लाभ कन्याओं को मिल रहा है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि प्रदेश में महिला स्व-सहायता समूहों को सशक्त बनाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और आर्थिक लाभ दिलवाने का कार्य भी काफी सफल रहा है। पुलिस बल में बेटियों की भर्ती के लिए प्रावधान कर उन्हें सशक्त बनाने की ठोस पहल की गई है। बेटियां लंबी उड़ान उड़ें, इसके लिए हम सभी को जुटना होगा। क्या है पंख अभियान मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में महिलाओं के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं संचालित हैं। इन्हें गति प्रदान की जाएगी। आज से प्रारंभ पंख अभियान अनूठा है जो बालिकाओं के संरक्षण, जागरण, पोषण, ज्ञान, स्वास्थ्य, स्वच्छता का प्रतीक है। पी से प्रोटेक्शन, ए से अवेयरनेस, एन से न्यूट्रीशन, के से नॉलेज एवं एच से हेल्थ व हाइजीन के माध्यम से बेटियों की सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाना है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि पंख अभियान के लिए हिन्दी में अभिप्राय- पावक (अग्नि), अंतरिक्ष, नीर (पानी), क्षितिज और हवा से है। यह अभियान बालिकाओं और महिलाओं की निराशा को दूर करेगा। भारत सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना किशोरियों को चहुंमुखी विकास में मदद करती है। मध्यप्रदेश में इसे नया स्वरूप दिया गया है।

मिंटो हॉल में उत्कृष्ट लोक सेवाएँ देने वाले कलेक्टर और अधिकारी पुरस्कृत

बिना लिए-दिए समय-सीमा में कार्य हो, यही सुशासन

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि नागरिकों को दफ्तरों में बिना लिए-दिए और बिना चक्कर लगाए निश्चित समय-सीमा में सेवा प्राप्त हो, यही सुशासन है। इसी उद्देश्य से दस वर्ष पूर्व मध्यप्रदेश में लोक सेवा प्रबंधन विभाग गठित कर नागरिकों को सेवाओं का प्रदाय शुरू किया गया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इससे नागरिकों के समानता के अधिकार की भी रक्षा हुई है। उन्हें किसी कार्य के लिए परेशान नहीं होना पड़ता है। मध्यप्रदेश से अन्य राज्य भी प्रेरणा लेकर ऐसा कार्य कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आज से प्रदेश में सी.एम. सेवा 181 के माध्यम से फोन द्वारा ही सेवाएँ प्रदाय की जा रही हैं। इसका विस्तार करते हुए अब तीन और सर्वाधिक जन-उपयोगी सेवाएँ खसरा, खतौनी एवं नक्शे की प्रतिलिपि सी.एम. जनसेवा के माध्यम से प्रदाय की जाएगी। इसके साथ प्रदेश में वॉट्सएप चैटबॉट सर्विस भी शुरू की जा रही है। गत 8-10 माह में भी अनेक नई सेवाएँ शुरू की गई हैं। इस व्यवस्था की जानकारी जन-प्रतिनिधियों द्वारा भी प्रचारित की जाए जिससे अधिक से अधिक लोग सेवाओं का लाभ ले सकें। मुख्यमंत्री श्री चौहान मिंटो हाल में लोक सेवा एवं सुशासन के क्षेत्र में बढ़ते कदम कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम मध्यप्रदेश में लोक सेवा प्रदाय गारंटी अधिनियम के सफलतम 10 वर्ष पूरे होने पर आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्रेष्ठ कार्य करने वाले कलेक्टर्स और अन्य अधिकारी पुरस्कृत किए गए। सहकारिता एवं लोक सेवा प्रबंधन मंत्री श्री अरविन्द सिंह भदौरिया और लोक निर्माण राज्य मंत्री श्री सुरेश धाकड़ भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि लोकतंत्र में सबसे बड़ी जनता है। मध्यप्रदेश मेरा मंदिर है और यहाँ की जनता मेरे लिए भगवान है। इस मंदिर का पुजारी शिवराज सिंह चौहान है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने श्रेष्ठ कार्य के लिए पुरस्कृत अधिकारियों को बधाई देते हुए अधिकारी वर्ग से आव्हान किया कि वे उपलब्ध सेवाओं के संबंध में नागरिकों को अवगत करवायें। पूरी क्षमता के साथ टीम भावना से कार्य कर आमजन को ईंधन, ऊर्जा, समय, राशि आदि के अपव्यय से बचाकर बिना परेशान हुए आवश्यक सेवाएँ प्रदान करवाई जाएं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों से व्यवस्था दुरुस्त हो जाती है। जनता को दिक्कत -परेशानी देने वाले बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे। इस उद्देश्य से ही पब्लिक सर्विस डिलेवरी गारंटी कानून बनाया गया है। यह भी व्यवस्था की गई कि तय वक्त में काम न करने वाले अधिकारियों पर जुर्माना किया जाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अधिकारियों से कहा कि इस व्यवस्था की निरंतर मॉनिटरिंग करने से आम नागरिकों को बेहतर सुविधाएँ दी जा सकेंगी मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि लोकतंत्र में सेवा भाव सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

ग्वालियर कलेक्टर को सीएम ने किया सम्मानित

ग्वालियर। लोक सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने एवं विधानसभा उप निर्वाचन में सराहनीय कार्य करने पर कलेक्टर ग्वालियर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह को भोपाल में आयोजित दो अलग-अलग कार्यक्रमों में सम्मानित किया गया। सोमवार को भोपाल के मिंटो हॉल में आयोजित हुए लोक सेवा में बढ़ते कदम कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ग्वालियर जिले को द्वितीय स्थान मिलने पर कलेक्टर श्री सिंह को सम्मानित किया। उन्होंने दोनों समारोहों में उपस्थित होकर पुरस्कार ग्रहण किया। उनके साथ लोक सेवा प्रबंधक ग्वालियर अमित शिरोमणि उपस्थित थे। वहीं राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर आयोजित हुए राज्य स्तरीय समारोह में भी कलेक्टर ग्वालियर को विधानसभा उप निर्वाचन में उल्लेखनीय कार्य करने पर सम्मानित किया।

राम मंदिर निर्माण के लिए निधि संकल्प संग्रह

यूपी के अयोध्या में राममंदिर निर्माण के लिए रामजन्म भूमि तीर्थ न्यास क्षेत्र की ओर से देशभर में धनसंग्रह अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही यह अभियान इसी माह में 14 फरवरी को पूरा होने जा रहा है। वहीं, प्रदेशवासियों ने राम मंदिर निर्माण में आस्था दिखाते हुए 100 करोड़ रुपए राशि की मदद की है। निर्माण के लिए पत्थर तराशने का काम भी जारी है। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले मंदिर के लिए 15 फीट नींव की खुदाई हो चुकी है। इधर, मंदिर निर्माण के लिए निधि संकल्प संग्रह अभियान के तहत 15 जनवरी से अब तक 27 दिनों करीब 1000 करोड़ रुपए के चेक ट्रस्ट के खाते में जमा कराए जा चुके हैं। वहीं, पैसा इकट्ठा करने वाली 37 हजार कार्यकर्ताओं की टीम के पास भी बड़ी संख्या में चेक रखे हुए हैं। बैंकों के हेड ऑफिस से इन चेकों को जमा करने के इंतजाम किए जा रहे हैं। भारत में पूज्य संतों ने यह भी आह्वान किया है कि श्रीराम जन्म भूमि में भव्य मंदिर बनने के साथ-साथ जन-जन के हृदय मंदिर में श्रीराम एवं उनके नीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा हो। श्रीराम 14 वर्षों तक नंगे पैर वन वन घूमे, समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। उन्होंने वंचित, उपेक्षित समझे जाने वाले लोगों को आत्मीयता से गले लगाया, अपनत्व की अनुभूति कराई, सभी से मित्रता की। जटायु को भी पिता का सम्मान दिया। नारी की उच्च गरिमा को पुनर्स्थापित किया। असुरों का विनाश कर आतंकवाद का समूल नाश किया। राम राज्य में परस्पर प्रेम, सद्भाव, मैत्री, करुणा, दया, ममता, समता, बंधुत्व, आरोग्य, त्रिविधताप विहीन, सर्वसमृद्धि पूर्ण जीवन सर्वत्र था। अतः हम सभी भारतीयों को मिलकर पुनः अपने दृढ़ संकल्प एवं सामूहिक पुरुषार्थ से पुनः एक बार ऐसा ही भारत बनाना है।

भारत में सनातन धर्म का गौरवशाली इतिहास पूरे विश्व में सबसे पुराना माना जाता है। कहते हैं कि लगभग 14,000 विक्रम सम्वत् पूर्व भगवान नील वराह ने अवतार लिया था। नील वराह काल के बाद आदि वराह काल और फिर श्वेत वराह काल हुए। इस काल में भगवान वराह ने धरती पर से जल को हटाया और उसे इंसानों के रहने लायक़ बनाया था। उसके बाद ब्रह्मा ने इंसानों की जाति का विस्तार किया और शिव ने सम्पूर्ण धरती पर धर्म और न्याय का राज्य क़ायम किया। सभ्यता की शुरुआत यहीं से मानी जाती है। सनातन धर्म की यह

कहानी वराह कल्प से ही शुरू होती है। जबकि इससे पहले का इतिहास भी भारतीय पुराणों में दर्ज है जिसे मुख्य 5 कल्पों के माध्यम से बताया गया है।पूरे विश्व में निवास कर रहे हिन्दू सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जिनके नाम से आज विश्व में भारत की पहचान होती है, का एक भव्य मंदिर भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में बनाया जाना शाश्वत प्रेरणा के साथ-साथ एक आवश्यकता भी माना जाना चाहिए। चूंकि बाबर एवं मीर बाक़ी नामक आक्रांताओं ने भगवान श्रीराम के मंदिर का विध्वंस कर उस स्थान पर एक मस्जिद का निर्माण कर लिया था अतः पुनः इस स्थान को मुक्त कराने हेतु प्रभु श्रीराम के भक्तों को 492 वर्षों तक लम्बा संघर्ष करना पड़ा है। अंततः 5 अगस्त 2020 को सदियों के स्वप्न-संकल्प सिद्धि का वह अलौकिक मुहूर्त उपस्थित हुआ। जब पूज्य महंत नृत्य गोपाल दास जी सहित देश भर की विभिन्न आध्यात्मिक धाराओं के प्रतिनिधि पूज्य आचार्यों, संतों, एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के पावन सानिध्य में भारत के जनप्रिय एवं यशस्वी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भूमि पूजन कर मंदिर निर्माण का सूत्रपात किया। इस शुभ मुहूर्त में देश के 3000 से भी अधिक पवित्र नदियों एवं तीर्थों का जल, विभिन्न जाति, जन जाति, श्रद्धा केंद्रों तथा बलिदानी कार सेवकों के घर से लायी गई रज (मिट्टी) ने सम्पूर्ण भारत वर्ष को आध्यात्मिक रूप से भूमि पूजन में उपस्थित कर दिया था।

मप्र के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

मध्य प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक, ग्वालियर कला, संस्कृति और इतिहास में समृद्ध है। यह शहर मध्य प्रदेश पर्यटन का एक प्रमुख हिस्सा है और वास्तुशिल्प चमत्कारों और ऐतिहासिक मील के पत्थर का एक आदर्श मिश्रण है।भारत अपनी विविधता के लिए जाना जाता है। यहां के हर राज्य की

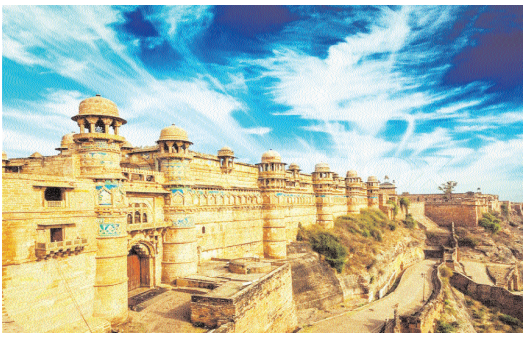

अपनी एक अलग विशेषता है, जो आंगतुकों को अपनी ओर खींचती है। वैसे अगर बात मध्यप्रदेश की हो तो इसे लोग भारत के दिल के रूप में भी जानते हैं, क्योंकि यहां पर आपको खाने-पीने से लेकर घूमने, शॉपिंग करने व इतिहास को करीब से जानने का मौका मिलेगा। अगर आप भी अपनी टेवल लिस्ट में मध्यप्रदेश को शामिल कर रहे हैं तो चलिए आज हम आपको मध्यप्रदेश में घूमने की कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बता रहे हैं-

मध्य प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक, ग्वालियर कला, संस्कृति और इतिहास में समृद्ध है। यह शहर मध्य प्रदेश पर्यटन का एक प्रमुख हिस्सा है और वास्तुशिल्प चमत्कारों और ऐतिहासिक मील के पत्थर का एक आदर्श मिश्रण है। शहर का सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण ग्वालियर का किला भारत के सर्वश्रेष्ठ किलों में से एक है। यहां पर आप ग्वालियर किले को देखने के अलावा सासबहू मंदिर में जाएं, पाटनकर और सर्राफा बाज़ारों में खरीदारी करें और गुजरी महल पुरातत्व संग्रहालय में समय बिताएं।मध्य प्रदेश पर्यटन स्थलों के नक्शे पर विचित्र शहर ओरछा, बुंदेला के राजपूतों की पूर्ववर्ती राजधानी है। इसके पास कुछ

अद्भुत किले और मंदिर हैं जो राजपूताना वास्तुकला को दर्शाते हैं। यहां पर आप राजा राम मंदिर में एक शानदार शाम की आरती में भाग ले सकते हैं। लक्ष्मीनारायण मंदिर में जाएं, फूलबाग का आनंद लें, बेतवा नदी में बोटिंग करें और ओरछा वन्यजीव अभ्यारण्य में जंगल सफारी करें।

जबलपुर प्राकृतिक भव्यता से भरा हुआ है। यह मध्य प्रदेश में घूमने के लिए सबसे आकर्षक स्थानों में से एक है। नर्मदा नदी के किनारे बसा यह शहर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है, जो ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां पर आपको अद्भुत झरने से लेकर संगमरमर के चट्टानी आउटर तक और राजसी किलों से लेकर बांधों तक को देखने का मौका मिलेगा।

भोपाल को झीलों का शहर भी कहा जाता ह। यह मध्य प्रदेश के सबसे दिलचस्प पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां पर कई झीलों, अविश्वसनीय संग्रहालयों, वन्यजीवों के भंडार, और ऐतिहासिक महलों की लंबी सूची है जो इसे घूमने के लिए एक बेहतरीन गंतव्य स्थान बनाती है। यहां पर आप सैर सपाटा से लेकर नाव की सवारी कर सकते हैं। इसके अलावा वाटर पार्क और केरवा झाल का आनंद लें।

गहोई समाज की नवयुवक मंडल कार्यकारिणी का शपथ समारोह सम्पन्न

● (पुष्पांजली टुडे), अर्पित गुप्ता, दबोह

भिण्ड/दबोह। गुरुवार को दबोह नगर में स्थित गहोई भवन धर्मशाला में गहोई समाज की बैठक संपन्न हुई जिसमे बीते रोज गठित हुई नवयुबक मण्डल की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ।जिसमे युवाओ के साथ साथ समाज के वरिष्ठ व बायोवृद्ध व्यक्तिगण मौजूद रहे।जिसमें मौजूदा वरिष्ठ लोगों के द्वारा समाज को किस तरह आगे बढ़ाया जाए और पदोन्नति की ओर ले जाया जाए उस पर चर्चा की गई।इस दौरान बैठक में मुख्य रूप से गहोई समाज के अध्यक्ष बलराम बिजपुरिया मौजूद रहे।समाज के अध्यक्ष बलराम विजपुरिया ने मौजूदा वरिष्ठ व युवाओ को संबोधित करते हुए कहा कि युवा समाज की एक अहम भूमिका तय करते हैं जब तक युवा समाज के लिए नहीं सोचेंगे तब तक समाज का विकास नहीं हो सकता है।इसलिए समाज को आगे बढ़ाने के लिए बीते रोज युवाओ के हाथ मे समाज की कमान सौंप नवयुबक मण्डल की कार्यकारिणी का गठन किया गया था।जिसमें नवयुवक मंडल अध्यक्ष का सर्व समिति से प्रसताव पारित कर सोनू आदित्य सेठ को बनाया गया।इसी क्रम में उपाध्यक्ष आलोक कुचिया,शांतनु पिपरसेनिया,देव गुप्ता,संगठन मंत्री सानू सेठ,महामंत्री राजा सर्राफ,रामू लहरिया,अंशु लहरिया,कोषाध्यक्ष अखिलेश पिपरसेनिया,सह कोषाध्यक्ष अंकित महातेले व प्रवक्ता मीडिया प्रभारी पत्रकार चिराग बरसैयां(गोलू)को बनाया गया तो वहीं नीरज महातेले,राजुल लहारिया,रानू कुचिया,वासुदेव कोठारी,रोहित कठ्ठिल,रवि सेठ,चंद्रमोहन बिलैया,श्यामू सेठ,कृष्ण कुमार कुरेले टिंकू,रामू कुरेले आदि को सदस्य बनाया गया।नवयुवक मंडल में अध्यक्ष बनाए जाने पर सानू आदित्य गुप्ता का सभी युवाओं ने माल्यार्पण कर स्वागत किया साथ ही सभी नवयुबक मण्डल में चयनित पदाधिकारियो का भी स्वागत युवाओ के द्वारा किया गया।तो वहीं नवनियुक्त अध्यक्ष सानू गुप्ता ने युवाओं को भरोसा दिलाया कि वह समिति के पदाधिकारियों व युवाओं का मनोबल कभी नहीं गिरने देंगे।इस दौरान बैठक में गहोई समाज के सभी वरिष्ठ पदाधिकारीगण व बायोवृद्ध व्यक्ति मौजूद रहे।सम्पूर्ण जानकारी नवयुबक मण्डल के मीडिया प्रभारी चिराग बरसैयां के द्वारा उपलब्ध कराई गई।

नमन गणतंत्र

गणतंत्र देशभक्तों की गाथाओं से भारतीय इतिहास के पृष्ठ भरे हुए हैं। देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों की संख्या में भारत माता के वीर सपूतों ने, भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना सर्वस्य न्योछावर कर दिया था। ऐसे ही महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के परिणाम स्वरूप हमारा देश, गणतान्त्रिक देश हो सका।26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व मे आया और

भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बडा संविधान है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया में 2 वर्ष, 11 महिना, 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान के वास्तुकार, भारत रत्न से अलंकृत डॉ.भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे लक्षणों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया।देश को गौरवशाली गणतन्त्र राष्ट्र बनाने में जिन देशभक्तो ने अपना बलिदान दिया उन्हे याद करके, भावांजली देने का पर्व है, 26 जनवरी।

गणतंत्र दिवस मनाते हुए हम अपनी उस विरासत से एकबारगी रूबरू हो रहे हैं, जिसकी केवल स्मृतियां शेष हैं, हालांकि यह विरासत रोमांचकारी है, प्रेरणादायक भी। यह मौका अपने अंदर झांकने और आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करने वाला राष्ट्रीय पर्व है। 'गणतंत्र' का स्वरूप पाने तक बड़े ही कठिन संघर्ष का रास्ता तय किया है हमारे देश ने। बहु-सांस्कृतिक, बहुजातीय, बहुभाषीय और बहुलताओं या विविधताओं वाले देश की आत्मा क्या है? क्या रही है हमारी पृष्ठभूमि या क्या है हमारा मूल आधार? इसको ठीक से जाने बगैर हम आगे नहीं बढ़ सकते। वेदों-ऋषियों की वाणी का मूल स्वर 'सहनाववतु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्य करवावहै'.. रहा है। सहजीवन और सहअस्तित्व हमारी भारतीय संस्कृति के मूल में है, इसकी आत्मा है। कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर के आह्वान- एकला चलो रे.. के अनुगमन में भारत कभी अकेले स्वाधीनता पाने के लिए आगे बढ़ा था। 'बिना खड्ग बिना ढाल' वाले गांधी के नेतृत्व में भारत की यह अविराम संघर्ष यात्रा आजादी के मुकाम पर पहुंच कर ही थमी। और हमारा यह अहिंसक स्वाधीनता संघर्ष पूरी दुनिया के लिए मिसाल बन गया। आज सचमुच 'इंडिया दैट इज भारत' की जगह 'भारत दैट इज इंडिया आल्सो' कहने की जरूरत है। ताकि नई पीढ़ी असली भारत को और उसकी मौलिकता को समझ सके। अनूदित भारत के कारण ही भारत के बारे में नासमझी पनपी और पसरी है। तभी तो, 'मी मुंबईकर या मराठी माणूस' कहने, गर्व करने और जूझने को तैयार लोग अगर 'मी भारतकर' कहने में गर्व करें तो हर्ज क्या है? फर्क सोच का है, वह सोच जो संकुचित राजनीति की जमीन से उपजती है। वोट बड़ा है या राष्ट्र, अब तो यह समझने-समझाने की कोशिशें होनी चाहिए। आजादी सिर्फ भाषा, धर्म, जाति या बोली के आधार पर देश को राज्य दर राज्य बांटने के लिए तो नहीं। आजादी का मूल्य नई पीढ़ी कैसे समझेगी? सिर्फ किताबों के पन्नों में दबे वीर बलिदानियों की कथाएं क्या कुछ अर्थ नहीं रखतीं? बच्चों और नई पीढ़ी के कानों से टकराकर लौटने वाली ये पंक्तियां- शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले/ वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा.. प्रेरक हैं। पर, अब तो शहीदों की याद में हर बरस मेले भी नहीं लगते। गणतंत्र दिवस या स्वाधीनता दिवस जैसे अवसरों पर अक्सर सिर्फ फर्ज अदायगी होती है। राष्ट्रीय पवरें में शामिल होने या मनाने की सरकारी चाबुक से निकली मजबूरी का आदेश उस उछाह-उमंग की जगह लेता जा रहा है, जो ऐसे अवसरों और ऐसे पवरें पर स्वाभाविक होनी चाहिए। ऐसे मौकों पर कार्यक्रमों में सम्मिलित होने की अपेक्षा किसी न किसी बहाने कन्नी काटने की प्रवृत्ति बढ़ी है। ऐसा ही रहा तो ये राष्ट्रीय पर्व सिर्फ फर्ज अदायगी के निर्थक पर्व बनकर रह जाएंगे। विडंबनाएं और भी हैं। एक शक्तिवर्धक पेय के विज्ञापन में बच्चे को शहीदों के नाम रटते दिखाया जाता है। यानी शहीद अब माल बेचने के माध्यम बनते जा रहे हैं। आज के फिल्मी दौर का बच्चा बॉबी देओल को शहीद भगतसिंह और आमिर खान को मंगल पांडे जानता है। उसे असली मंगल पांडे या भगतसिंह के बलिदान से ज्यादा कुछ लेना-देना नहीं। मीडिया ने भी इन शहीदों के चरित्र का विद्रूप, समय-समय पर पेश किया है। सरकारी प्रकाशन की अनेक किताबों में शहीदों का चरित्र गलत-सही ढंग से प्रस्तुत किए जाने की शिकायतें तो आम थीं। इंतहा तो तब हुई जब एक फिल्म में मंगल पांडे को नाचने-गाने वाली औरतों के पास जाने वाला दिखाया। कर्नाटक में बच्चों के लिए प्रकाशित सरकारी किताबों में महारानी लक्ष्मीबाई को हुक्का पीते हुए चित्रित किया गया। बहादुरशाह जफर ने कहा था- पै फातिहा आये क्यूं/ कोई चार फूल चढ़ाये क्यूं/ कोई शमा आके जलाये क्यूं/ मैं वो बेकसी का मजार हूं..। यानी कोई शहीदों की मजार पर फातिहा (प्रार्थना) क्यों पढ़ेगा, कोई चार फूल क्यों चढाएगा, कोई दीया-बाती क्यों करेगा? ये मजारें बेकसी की यानी उपेक्षित और बेबस लोगों की है। जफर की ये लाइनें आज स्वतंत्र भारत में चरितार्थ होती दिखाई पड़ रही हैं।

श्योपुर की पुरातनता में है पर्यटन की नूतन संभावनाएँ

मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों के प्रति बढ़ते रूझान को देखते हुए पर्यटन विभाग ने प्रदेश के महत्वपूर्ण पर कम जाने-माने पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर विकसित करने का निर्णय लिया है। इस क्रम में सर्वप्रथम श्योपुर में बैठक कर जिले की ऐतिहासिक, पौराणिक, प्राकृतिक विरासतों को चिन्हित किया जाएगा।श्योपुर मप्र का सीमांत जिला है, जिसे चम्बल-पार्वती नदी के उस पार राजस्थान के बारां, कोटा, सवाई माधोपुर, करौली जिले घेरे हुए हैं। इसे मुसलमान शासकों ने स्योसूपुर और गौड़ राजाओं के समय 16वीं शताब्दी में सहरिया के नाम पर श्योपुर कहा गया। छठवीं सदी में यह अवंति जनपद का हिस्सा था। छोटे जनपदों के बड़े जनपदों में विलीनीकरण के बाद यह मगध साम्राज्य का हिस्सा बन गया। नन्दों के पतन के बाद यह क्रमश- मौर्य और शुंगवंश से शासित रहा। बाद में यह नाग और गुप्त साम्राज्य का हिस्सा रहा। आठवीं सदी में यह गुर्जर प्रतिहार वंश के अधीन रहा। दसवीं सदी से डोब कुंड के कच्छपघातों का इस क्षेत्र पर शासन रहा। वर्ष 1398 में यह ग्वालियर के तोमरों के अधीन रहा। इसके बाद यह क्षेत्र मुगलों के अधीन आया। मुगलों के पतन के बाद यहाँ गौड़ राजाओं का शासन रहा, जिनके शासन काल में श्योपुर में किला, मानपुर, काशीपुर में गढ़ी महलों का निर्माण हुआ, जिनके अदभुत भित्ति चित्र आज भी देखे जा सकते हैं। खडगराय कृत गोपांचल आख्यान में श्योपुर का जिक्र आया है, जिसके अनुसार नरेशर राजा अजयपाल ने 1194 से 1219 ई. तक श्योपुर को अपनी राजधानी बनाकर राज्य किया था। वर्ष 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर को जीतते समय हम्मीरदेव द्वारा शासित 10 किलों को भी जीत लिया। बाद में श्योपुर मेवाड़ के राणाओं के आधिपत्य में आ गया। वर्ष 1489 में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी ने इसे जीतकर अपनी सल्तनत का हिस्सा बना लिया। वर्ष 1542 में श्योपुर किला शेरशाह के अधीन हो गया। शेरशाह द्वारा बनवाया गया ईदगाह व उसके पुत्र इस्लाम शाह द्वारा निर्मित उसके सिपहसालार का विशाल मकबरा एक दर्शनीय स्थल है। बाद में बूंदी के राजा सुर्जन सिंह हाड़ा ने इसे जीतकर अजमेर सूबे के अंतर्गत रणथम्भौर रियासत का हिस्सा बना दिया।

कहा जाता है कि श्योपुर किले को राजा विट्ठल दास गोपावत के पुत्र अनिरूद्ध गौड़ गोपावत ने वर्ष 1584 में बनवाना प्रारम्भ किया, जिसे राजा नरसिंह गौड़ ने वर्ष 1631 में पूर्ण कराया। श्योपुर में वर्ष 1644 के लेख में राजा गोपालदास के पुत्र मनोहर दास द्वारा दिये गये दान का उल्लेख है। इस लेख में औरंगज़ेब द्वारा राजा गोपालदास की उस वीरता का आदर करने का भी उल्लेख है, जो उन्होंने शाहजहाँ से लड़ते समय दिखाई थी। वर्ष 1669 के लेख में राजा इंदर सिंह, राजा उत्तमराम, राजा पुरूषोत्तम सिंह गौड का उल्लेख है। इसी प्रकार वर्ष 1685 के लेख में राजा राजसिंह, महाराजा उद्योत सिंह का उल्लेख है। राधा वल्लभ मंदिर से मिले वर्ष 1809 के अभिलेख में ग्वालियर के महाराजा दौलत राव सिंधिया के सेनापति जॉन बत्तीस और श्योपुर के राजा राधिक दास के मध्य हुए युद्ध का वर्णन है।

महाराजा दौलत राव सिंधिया द्वारा श्योपुर किला जीतने तक यह किला मुगलों के कदर राजाओं के रूप में बंगाल से अजमेर आये राजा वत्सराज गौड़ के वंशजों के आधिपत्य में रहा। सिपाहड़ रियासत के इन 225 वर्षों का इतिहास गौड़ राजाओं की कीर्ति गाथा, स्थापत्य कला, संस्कृति व संगीत के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान से भरा है। नरसिंह महल, पतंगबुर्ज़, मनोहर बावड़ी, राजा इंदर सिंह, राजा किशोरदास की छत्रियां उस समय की स्थापत्य कला के सुंदर नमूने हैं। सोलहवीं सदी में 48 स्तंभों से युक्त राजा नरसिंह गौड़ महल में दरबार लगता था। इसमें से एक सुरंग बड़ोदा तक जाती है। इसमें कांच की कारीगरी का काम है। पतंगबुर्ज का निर्माण भी इसी काल का है। आठ स्तंभों पर आधारित पतंगबुर्ज का उपयोग पतंग उड़ाने के लिए किया जाता होगा। राधावल्लभ मंदिर, राजा इंद्रा सिंह, किशोरदास की छत्रियां, बारादरी, गुरूमहल, सूरी का मकबरा, घुड़साल और अनेक गौड़कालीन दर्शनीय स्थल हैं। दरबार हॉल, दीवान-ए-आम सिंधियाकालीन दर्शनीय स्थल हैं। सीप नदी का तट इस दुर्ग को और मोहक बना देता है।

हम समृद्ध और विकसित प्रदेश बनायेंगे

मुख्यमंत्री ने किया 505 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश में विकास का यज्ञ शुरू हो गया है। इसके लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं। आज ही ग्वालियर के चहुंमुखी विकास को लेकर जिला प्रशासन के साथ ढ़ाई घंटे बैठक लेकर रोडमैप तैयार किया है। यह ग्वालियर के इतिहास का पहला दिन है जिसमें यहां प्राचीन इमारतों के साथ-साथ एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, पश्चिम रिंग रोड, बस स्टेण्ड, पर्यटन, खेल के मैदान, अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम सहित शहर के अधोसंरचना विकास पर विस्तार से चर्चा हुई। इन सभी योजनाओं को मूर्तरूप देने के लिये हर संभव प्रयास करके पांच वर्ष में पूरा करेंगे। उन्होंने कहा जरूरत पड़ने पर और भी योजनाएं बनाई जायेंगीं। हम समृद्ध और विकसित मध्यप्रदेश बनाएंगे।

रविवार को फूलबाग में विशाल जनसभा को संबोधित करने के साथ ही मुख्यमंत्री ने 505 करोड़ रूपए से अधिक की लागत के 23 विकास कार्यों का लोकार्पण और 13 नए निर्माण विकास कार्यों का शिलान्यास किया। इस मौके पर उन्होंने मध्यप्रदेश डे राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन सहित अन्य योजनाओं में 29 लोगों को एक करोड़ 64 लाख 28 हजार 800 रूपए के चैक भी वितरित किए। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया, प्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री भारत सिंह कुशवाह, नगरीय प्रशासन राज्य मंत्री ओपीएस भदौरिया, पूर्व सांसद अनूप मिश्रा, पूर्व मंत्री श्रीमती माया सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष कमल माखीजानी, पूर्व साडा अध्यक्ष जयसिंह कुशवाह सहित पूर्व विधायकों सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

पत्थरबाजों को लेकर सख्ती की जाएगी : गृहमंत्री मिश्रा

प्रदेश में अब सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का किसी को अधिकार नहीं है। पत्थर चलाने वालों के खिलाफ सख्ती से निपटा जाएगा। मध्यप्रदेश सरकार जल्द ही ऐसे लोगों से निपटने के लिए कानून बनाने पर विचार कर रही है। इनके खिलाफ कठोर कार्रवाई कर उनसे ही वसूली भी की जाए। यह बात गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने गुरुवार को अपने निवास पर कही। उन्होंने कहा कि जिनके घर से पत्थर आएंगे, उन्हीं के घर के पत्थर निकाले जाएंगे। यानी हम ऐसे लोगों पर नकेल कसेंगे, ताकि इस तरह की हरकत दोबारा करने से पहले वे दस बार सोचें। मुख्यमंत्री भी ऐसे मामलों में आरोपियों की घर और संपत्ति नष्ट करने के आदेश दे चुकी है। हालांकि नया कानून कैसा और क्या होगा, इसके बारे में गृहमंत्री ने ज्यादा जानकारी नहीं दी। इससे पहले प्रदेश में लव जिहाद को लेकर नया कानून 9 जनवरी से लागू हो चुका है।नरोत्तम मिश्रा ने दिग्विजय सिंह के बयानों पर भी तंज कसा है। मिश्रा ने कहा युवा जो इटली चले गए थे। दिग्विजय सिंह का ध्यान उस तरफ था। उन्होंने माना कि वो युवा जनता के बीच जाएं, मतलब इटली ना जाएं। दिग्विजय ने कहा कि जाएं। मतलब कांग्रेस जनता के बीच नहीं जा रही है। वो स्थ ष्ठुद्यद्यद्गस्र युवा हैं, जिसे वे समझाने की उम्मीद कर रहे हैं उन्हें इटली वाले समझा दें। वो खुद तो समझ लें कि किसान कानून क्या है, तभी तो बताएंगे। मुझे नहीं लगता है कि उन्हें आज तक समझ में आया होगा। मैं बहुत छोटा हूं, लेकिन वे ही समझा दें कि इस काले कानून में काला क्या है।

मेले को पूर्ण गरिमा और भव्यता के साथ आयोजित करें

श्रीमंत माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला इस बार भी पूर्ण भव्यता के साथ आयोजित होगा। मेला 15 फरवरी से 15 अप्रैल 2021 तक आयोजित किया जायेगा। मेले का शुभारंभ 15 फरवरी को किया जायेगा। मेले को पूर्ण भव्यता के साथ एक मार्च से आयोजित करने के दिशा-निर्देश दिए गए हैं। प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री ओमप्रकाश सखलेचा की अध्यक्षता में संचालक मण्डल की 42वीं बैठक में यह निर्णय लिया गया है। व्यापार मेला प्राधिकरण के सभाकक्ष में मंगलवार को आयोजित संचालक मण्डल की बैठक में मेले के आयोजन के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक में जिला पंचायत की प्रशासकीय समिति की अध्यक्ष श्रीमती मनीषा यादव, ग्वालियर पूर्व के विधायक डॉ. सतीश सिकरवार, ग्वालियर संभाग के आयुक्त श्री आशीष सक्सेना, आईजी ग्वालियर रेंज श्री अविनाश शर्मा, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री अमित सांघी, नगर निगम आयुक्त श्री शिवम वर्मा, अपर कलेक्टर श्री आशीष तिवारी, जीएम डीआईसी श्री अरविंद बोहरे, मेला सचिव श्री निरंजनलाल श्रीवास्तव सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा है कि ग्वालियर का व्यापार मेला बहुत ही ऐतिहासिक मेला है। इस मेले को इस वर्ष भी पूर्ण भव्यता और गरिमा के साथ आयोजित किया जाए। मेले में आने वाले व्यापारियों को हर प्रकार की सुविधायें उपलब्ध कराई जाएं। इसके साथ ही प्रदेशभर से आने

वाले सैलानियों के लिये भी मेले में हर प्रकार की सुविधायें हों, यह सुनिश्चित किया जाए। मंत्री श्री सखलेचा ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा ग्वालियर व्यापार मेले में वाहनों के पंजीयन शुल्क में छूट देने की घोषणा की है। मेला प्रांगण में ही आरटीओ ऑफिस स्थापित कर मेले में क्रय किए जाने वाले सभी वाहनों का पंजीयन सुनिश्चित किया जाए। मंत्री श्री सखलेचा ने यह भी कहा कि मेला प्राधिकरण द्वारा मेले में आयोजित किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी भव्यता से आयोजित किए जाएं और इनमें प्रस्तुत किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम गरिमामय हों, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देशित किया है कि मेले के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रचार-प्रसार के लिये एक ईवेंट कंपनी को भी रखा जाए। इसके लिये प्राधिकरण तत्परता से कार्रवाई सुनिश्चित करे। बैठक में हर वर्ष मेले में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय पशु एवं किसान मेले के आयोजन के संबंध में निर्णय लिया गया कि प्राधिकरण इसका आयोजन भी अवश्य करे। इसके लिये स्थानीय स्तर पर निर्णय लेकर उचित समय पर इसका आयोजन हो, यह सुनिश्चित किया जाए। मेले में आयोजित होने वाले दंगल को भी इस बार आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

गहोई समाज ने धूमधाम से मनाया गहोई दिवस

हमेशा समाज को उठाने का प्रयास करना चाहिये,न की गिराने काः के के कट्टिल

● (पुष्पांजली टुडे), अर्पित गुप्ता, दबोह

हर वर्ष भी भांति नगर दबोह में गहोई दिवस बड़े ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया।इस दौरान गहोई समाज द्वारा सर्वप्रथम गहोई भवन धर्मशाला में सुंदरकांड का पाठ किया गया तदोपरांत विशाल शोभा यात्रा निकाली गई।शोभा यात्रा नगए मुख्य मार्ग बस स्टैंड,गणेश चौक,रिछा मोहल्ला,चौक मोहल्ला होते हुए कोंच रोड पहुँची इसके उपरांत यह शोभा यात्रा गहोई भवन धर्मशाला सभा मे परिवर्तित हो गई।इस शोभा यात्रा में गहोई समाज के सैंकड़ों लोगो के साथ सजातीय माता बहनों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।इसी दौरान नगर में शोभा यात्रा निकलने पर बुधौलिया मार्केट पर ब्राहम्ण समाज द्वारा,व गहोई समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति अवध किशोर गुप्ता कोंच रोड के द्वारा पुष्प वर्षा की गई।कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में गहोई समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष के के कट्टिल मौजूद रहे तो वही विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व अध्यक्ष राधेश्याम कुचिया,महामंत्री आलोक टिकरिया,कोषाध्यक्ष मोहन कनकने,अध्यक्ष वरिष्ठ संघ ओमप्रकाश सेठ,महिला मंडल अध्यक्ष गीता नगरीय,नरेश कुचिया,रामबाबू खर्द आदि समाज के पदाधिकारिगण मौजूद रहे।कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सर्वप्रथम माँ सरस्वती व गहोई समाज के प्रेरणा स्त्रोत राष्ट्रकवि स्व. मैथलीशरण गुप्त जी के छायाचित्र व माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित किए गए।तदोपरांत गहोई भवन दबोह में समाज के लोगो को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम राष्ट्रीय अध्यक्ष केके कट्टिल ने कहा कि गहोई दिवस वैदिक पद्धति के अनुसार जब सूर्य उत्तरायण होते हैं,उसके उपरांत 14 जनवरी मकर संक्रांति के बाद प्रथम रविवार को गहोई दिवस मनाया जाता है।उन्होंने कहा कि हमे समाज के बदलने से पहले खुद को बदलना ज़रूरी है,दुनिया को बदलने से पहले खुद को ठीक करना ज़रूरी है।समाज में जिस बदलाव की सबसे ज्यादा ज़रूरत है वो है लोगों के मन में सुरक्षा का भाव आना।जिसकी शुरुआत घर से होती है।उन्होंने कहा कि सामाजिक एकता शिक्षा से ही समाज का उद्धार उत्थान संभव है उन्होंने कहा कि शिक्षा की परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करना गौरव की बात है,आवश्यकता है तो जीवन की परीक्षा संस्कारों के आधार पर उच्च अंक प्राप्त करना गौरव की बात है समाज की एकजुटता एकता से ही समाज का विकास संभव है शिक्षा के बिना विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है इसलिए समाज के बालक बालिका है इच्छा की तरफ ध्यान दें समाज में व्याप्त कुरीतियों,व्याप्त बेरोजगारी को मिटाये जाने के लिए एकजुटता बहुत जरूरी है समाज के लोगों को एक जगह बैठ कर सहयोग की भावना से काम करना चाहिए तभी समाज का उद्धार संभव है समाज में व्याप्त कुरीतियां तभी मिट सकती हैं जब समाज के लोग कृतियों को अपने घर से मिटाए जाने के लिए प्रयास शुरू करेंगे।

महिला मंडल अध्यक्ष गीता नगरिया ने कहा कि आज हमे हमारे गहोई परिवारो में स्वास्थ्य,बुजुर्गों का सम्मान व बच्चों के संस्कार

ध्यान में देने की जरूरत है,मैं चाहती हूँ कि दबोह में भी हमारी समाज का एक महिला मंडल बनाया जाए क्योंकि संगठन एक बहुत बड़ी ताकत रखता है इसलिए महिलाओं को भी हमारे समाज की एक टीम बनाकर महिला शक्ति को भी आंगे बढ़ाने का कार्य करना चाहिये वैसे तो हमारे गहोई समाज मे ज्ञान की कमी नही है परंतु हमे उस ज्ञान को तरास कर बाहर निकालने की जरूरत है आज हमें हमारे समाज के युवाओं के ज्ञान व उनकी शक्ति जागृत करने की आवश्यकता है मेरे द्वारा समाज के हित मे कही गयी बातो को पूरा करने के लिए भविष्य में आपको मेरी आवश्यकता पड़ती है तो मै उसमे आपका पूरा सहयोग करने की कोशिश करेंगे।वहीं मौजूद महिला मंडल अध्यक्ष गीता नगरिया ने कहा कि आज हमे हमारे गहोई परिवारो में स्वास्थ्य,बुजुर्गों का सम्मान व बच्चों के संस्कार ध्यान में देने की जरूरत है,मैं चाहती हूँ कि दबोह में भी हमारी समाज का एक महिला मंडल बनाया जाए क्योंकि संगठन एक बहुत बड़ी ताकत रखता है इसलिए महिलाओं को भी हमारे समाज की एक टीम बनाकर महिला शक्ति को भी आंगे बढ़ाने का कार्य करना चाहिये वैसे तो हमारे गहोई समाज मे ज्ञान की कमी नही है परंतु हमे उस ज्ञान को तरास कर बाहर निकालने की जरूरत है आज हमें हमारे समाज के युवाओं के ज्ञान व उनकी शक्ति जागृत करने की आवश्यकता है मेरे द्वारा समाज के हित मे कही गयी बातो को पूरा करने के लिए भविष्य में आपको मेरी आवश्यकता पड़ती है तो मै उसमे आपका पूरा सहयोग करने की कोशिश करेंगे।पूर्व अध्यक्ष राधेश्याम कुचिया ने कहा कि समाज को एकजुट होने की जरूरत है जब तक हम एकजुट नही होते हैं तब तक कुछ भी सम्भव नही है।उन्होंने कहा कि सामाजिक एकता-एकजुटता से ही समाज का विकास संभव है उन्होंने कहा कि शिक्षक वह दीपक है जो स्वयं जलकर औरों को जीवन के रूपी लौ बनकर प्रकाश भर देता है।इसी क्रम में समाज के अन्य पदाधिकारियो ने भी समाज के लोगो के बीच मंच के द्वारा अपनी बात रखी।इस दौरान गहोई समाज पदाधिकारियो के द्वारा 75 वर्ष से ऊपर की उम्र के वृद्धजनों का सम्मान किया गया साथ ही राजनीति में सक्रिय व समाजसेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले तथा शिक्षा के क्षेत्र में एक अलग मुकाम हांसिल करने वाले बालक बालिकाओ का भी सम्मान समाज के द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया।कार्यक्रम के अंत मे आभार व्यक्त दबोह गहोई समाज के अध्यक्ष बलराम सोनी(विजपुरिया)ने किया तो वहीं मंच का संचालन रजनीश पिपरसेनिया के द्वारा किया गया।इस दौरान समाज के वरिष्ठ लोगो में सीताराम गुप्ता(मास्टर),केशव विजपुरिया,ओमप्रकाश तरसोलिया,पूर्व नप अध्यक्ष विष्णु दयाल बिलैया,साधुराम कोठारी,दिनेश मिठया,चप्पे कुरेले,मदन कुरेले,रामसेवक रौनी वाले,बसन्त लाल मैथाने वाले,जगदीश प्रसाद बरसैंया,जयप्रकाश सर्राफ,नारायण दास रीखोलिया,अवध किशोर गुप्ता(माधोगढ़ बाले)शिवनारायण सर्राफ,मुन्ना रेजा,रामप्रकाश कुचिया के साथ नवयुवक मंडल में राकेश कोठारी,अभय सेठ,मंगल कोठारी,सन्त विजपुरिया,गिरजाशंकर पिपरसेनिया,कल्लू विजपुरिया,अरविंद सांवला(छोटू नेता),चन्द्रभान सेठ,ब्रजेश तरसोलिया,अनिल सेठ(ढिंगरा),अरुण विजपुरिया,सोनू मैथाने वाले,मनोज खर्द,विनय बिलैया,मंगेश कोठारी,राममोहन कोठारी,राजीव कुचिया,राजू ककरौली बाले,हिमांशु पटेल(इलू),शिवम बांदिल,चिराग गुप्ता,प्रतीक गुप्ता,शिवा गुप्ता,नीरज महातेले,रामू कुरेले,कन्हैया विजपुरिया,शान्तनु गुप्ता,सागर गुप्ता,गोलू गुप्ता आदि मौजूद रहे।

न्यायिक प्रक्रिया के तीन अभिन्न भाग हैं पुलिस, अभियोजन और न्यायालय

एक दिवसीय क्षेत्रीय विधिक कार्यशाला

● (पुष्पांजली टुडे), महेन्द्र शर्मा, गोहद

जब हमारे समक्ष किसी अपराध की बात आती है तो यह एक सर्वमान्य प्रिंसिपल है कि एक अपराध हमेशा समाज के खिलाफ होता है, भले ही वह अपराध चोरी हो, हत्या हो, या किसी व्यक्ति को गंभीर रूप से चोट पहुँचाता हो। आपराधिक घटना भले ही एक व्यक्ति के खिलाफ अंजाम दी गई हो लेकिन उसका नुकसान समाज को उठाना पडता है, लोगो के बीच भय, दहशत फैलती है और समाज की शांति भंग होती है। जब किसी अपराध को अंजाम दिया जाता है तब अभियुक्त के खिलाफ मामले को राज्य के जरिए अदालत तक पहुचाया जाता है क्योंकि राज्य इस बात की जिम्मेदारी को समझता है कि किसी अपराध का होना राज्य के अस्तित्व के खिलाफ है और चूकि समाज मे अपराध की रोकथाम भी उसी के जिम्मे होती है इसलिए एसी घटनाओं को एक न्यायोचित परिणाम तक पहुचाना भी राज्य की ही जिम्मेदारी बनती है। तीनों का आपस में सामंजस्य होगा तभी न्याय प्राप्त किया जा सकता है तथा इसमें सबसे महत्व पूर्ण भूमिका अभियोजन की होती है। सफल, सहज, एवं उचित न्याय प्रदान कराने की धुरी है अभियोजन।'' मध्य प्रदेश लोक अभियोजन विभाग के अंतर्गत श्री एल. एस. कदम, संयुक्त संचालक मध्य् प्रदेश लोक अभियोजन के निर्देशानुसार प्रत्येक संभाग के संभागीय जिला द्वारा एक दिवसीय संभागीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यशाला का उद्देश्य अभियोजन अधिकारीगण को प्रशिक्षण देना एवं उनकी व्यावसायिक दक्षता को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावशाली बनाना है। मध्यप्रदेश लोक अभियोजन विभाग के चंबल संभाग के जनसंपर्क अधिकारी श्री इन्द्रेस कुमार प्रधान ने बताया कि इसी तारतम्य में चंबल संभाग द्वारा एक दिवसीय क्षेत्रीय विधिक कार्यशाला का आयोजन विकास भवन मालनपुर जिला भिण्ड म0 प्र0 में दिनांक 31.01.2021 को मुख्य अतिथि माननीय श्री एल.एस. कदम संयुक्त संचालक लोक अभियोजन संचालनालय म0 प्र0 भोपाल, श्री गजेन्द्र सिंह, जिला एवं सत्र न्यायाधीश भिण्ड एवं श्री मनोज कुमार सिंह पुलिस अधीक्षक भिण्ड की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

कार्याशाला का उद्घाटन एवं कार्यक्रम

कार्याशाला का उद्घाटन एवं कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री गजेन्द्र सिंह, श्री मनोज सिंह पुलिस अधीक्षक भिण्ड के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। कार्यशाला में विभिन्न विधिक एवं व्यावसायिक दक्षता संवर्धन विषयों पर प्रशिक्षण चंबल संभाग के प्रत्येक जिले से आए सत्र न्यायालय में अभियोजन का पक्ष रखने वाले लगभग 28 अभियोजन अधिकारियों को दिया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता के रूप में माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री गजेन्द्र सिंह, श्री एल.एस. कदम, संयुक्त संचालक म.प्र. लोक अभियोजन, श्री विजयदत्त शर्मा एडवोकेट हाईकोर्ट ग्वालियर, डॉ0 विनोद ढीगरा वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी क्षेत्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला ग्वालियर द्वारा अभियोजन अधिकारियों का मार्गदर्शन किया गया।

आपका काम ही आपकी पहचान बनता है

संयुक्त संचालक श्री एल.एस. कदम ने प्रतिभागी अभियोजन अधिकारीगण को मार्गदर्शित करते हुए कहा कि हम पूरी ईमानदारी, तैयारी, और मेहनत से अपने काम को करें। आप जहां भी रहेंगे आपका काम ही आपकी पहचान होगा। आपने अपने संबोधन में कहा कि हम सब समाज के अंतिम व्यटक्ति को न्याय मिले इस हेतु प्रयास करें। कानून की प्रक्रिया को कैसे सरल रूप में आमजन तक पहुंचाया जा सके इस हेतु निरन्त्र प्रयासरत् एवं प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने प्रशिक्षण के महत्व को बताते हुए कहा कि जीवन में सतत् नया प्राप्त करने की ललक इंसान को सफल बनाती है। हम निरन्तर प्रशिक्षण के माध्यम से अभियोजन अधिकारियों की व्यावसायिक दक्षता के संवर्धन हेतु निरन्तर प्रयासरत् हैं।

"अभियोजन की भूमिका न्याय प्रदान करने में आवश्यक है"

श्री प्रवीण दीक्षित उपसंचालक अभियोजन/जिला अभियोजन अधिकारी भिण्ड ने अभियोजन अधिकारी के सर्वांगीण विकास एवं कार्य दक्षता में वृद्धि, हेतु विषय पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए एवं उपस्थित अथितियों एवं अभियोजन अधिकारियों का आभार व्यक्त किया तथा कार्यशाला के समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

राष्ट्रीय युवाध्यक्ष अर्पित गुप्ता की अगुवाई में समाजसेवियों ने सौंपा ज्ञापन

● (पुष्पांजली टुडे), रोहित गुप्ता, दबोह

वेब सीरीज तांडव में हिंदू देवी-देवताओं के अपमान पर देशभर में हो रहे विरोध प्रदर्शन के चलते नगर दबोह में पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन समाजसेवी संस्था ने थाना प्रभारी दबोह को एक शिकायती आवेदन सौंपा जिसमे उन्होंने फ़िल्म निर्देशक व एक्टर के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है।यहां बता दें कि समाजसेवी संस्था पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन के राष्ट्रीय युवाध्यक्ष अर्पित गुप्ता की अगुवाई में संस्था ने दबोह थाना प्रभारी के नाम एएसआई अवनीश शर्मा को शिकायती ज्ञापन सौंपा।पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन के आवेदन पर चार लोगों को नामजद किया है जिसमें तांडव बेब सीरीज के डायरेक्टर अली अब्बास जफर,एक्टर मोहमतद जीशन,आसिब जकरिया व सैफ़ अली खान के नाम दर्ज है।

इस दौरान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष अर्पित गुप्ता ने कहा कि तांडव वेब सीरीज में जिस तरह से हिन्दू धर्म सनातन संस्कृति से खिलवाड़ किया जा रहा,उसे किसी भी तरह से बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने मांग किया है कि यदि हिन्दू धर्म सनातन संस्कृति से

खिलवाड़ करने वाली वेब सीरीज पर बैन नहीं लगाया गया तो सभी लोग मिलकर सम्पूर्ण मप्र में आंदोलन कर सम्बन्धित के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की मांग करेंगे।उन्होंने वेब सीरीज के लिए भी सेंसर बोर्ड बनाने की मांग की।उन्होंने बताया कि वेब सीरीज तांडव में कुछ सीन ऐसे दिखाए गए हैं।जिसमें धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप है।सीरीज के पहले एपिसोड के ही एक सीन में एक्टर जीशान अयूब भगवान शंकर का रूप बनाए हुए हैं उनके हाथ में त्रिशूल और गले में रुद्राक्ष की माला है।हालांकि,एक्टर ने इस सीन में कोट-पैंट पहन रखा है भगवान शिव के रूप में वह कहते हैं आखिर आपको किससे आजादी चाहिए तभी मंच पर संचालक की भूमिका में नारद मुनि का किरदार आता है वह कहते हैं- नारायण-नारायण प्रभु कुछ कीजिए रामजी के फॉलोअर्स लगातार सोशल मीडिया पर बढ़ते ही जा रहे हैं।इस दौरान ज्ञापन सौंपने वालो में युवाध्यक्ष अर्पित गुप्ता,हरिश्चंद्र पांडेय,दिलीप नायक,अजय त्रिपाठी,पंकज शर्मा,कुंजबिहारी कौरव,राजा भैया पाल,भीम प्रकाश बौद्ध,मंगेश कोठारी,राजभुबन यादव,अजय त्रिपाठी,मोहित गोस्वामी,रोहित गुप्ता,विराग बरसैयां,प्रेमसिंह पाल,हिमांशु गुप्ता(पटेल),सुधांशु मुदगल,शिवा गुप्ता,प्रतीक गुप्ता,नीलू पाठक व शान्तनु गुप्ता के साथ अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

मुद्दा स्वास्थ्य कार्ड योजनांतर्गत कृषक परीक्षण शिविर आयोजित किया गया

● (पुष्पांजली टुडे ब्यूरो), नेनाराम सीरवी, पाली

रानी पाली नेनाराम सीरवी। राजस्थान के पाली जिले के पाली पंचायत समिति के अंतर्गत ग्राम पंचायत सोडावास किसान सेवा केंद्र पर मुद्दा स्वास्थ्य कार्ड योजना के तहत शिविर का आयोजन किया गया। सोडावास ग्राम पंचायत के अलावा पाली पंचायत समिति ग्राम पंचायत वडेर वास के राजस्व गांव रामपुरा में भी शिविर का आयोजन किया गया। सोडावास किसान सेवा केंद्र पर सहायक निदेशक कृषि विस्तार पाली के आदेशानुसार शिविर का आयोजन किया गया।शिविर के दौरान चयनित ग्राम सोडावास में एक दिवसीय अनुसूचित जाति कृषक परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें व्याख्याता डॉ देवी सिंह भाटी सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ देवी सिंह भाटी द्वारा शिविर के दौरान आए हुए चयनित कृषकों को मिट्टी परीक्षण। मिट्टी नमूना। जल परीक्षण। संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी विस्तार से दी गई। पार्टी द्वारा प्रयोगशाला में मिट्टी कैसे पहुंचाई जाए और किस प्रकार से अपने खेत से मिट्टी का सैंपल लिया जाए। जल का सैंपल किस विधि के अनुसार लिया जाए। आदि सहित अनेक कृषि संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी डॉ भाटी द्वारा दी गई। शिविर के दौरान आए हुए कृषकों को कृषि के साथ मानव आहार। पशु आहार संबंधित कई प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। रॉयल हेल्थ कार्ड का उपयोग किस प्रकार किया जाए।लवण. शारिय. मुद्दों का सुधार एवं प्रबंधन समस्या ग्रस्त मुद्दे तू फसलों का चयन संबंधित कीट व्याधि नियंत्रण संबंधित विस्तार से जानकारी डॉक्टर देवी सिंह भाटी द्वारा दी गई। सोडावास किसान सेवा केंद्र के कृषि प्रवेशक गोविंद सिंह कुंपावत ने विभागीय योजना की जानकारी विस्तार से दी गई। जैविक खेती परंपरागत। सामाजिक जीवन में नशा मुक्ति के दुष्प्रभाव संबंधित जानकारी दी गई। इसके

अलावा किसान सेवा केंद्र सोडावास के कृषि प्रवेशक गोविंद सिंह कुंपावत द्वारा किसानों को रवि एवं खरीफ की फसलों को कीटनाशक रोगों से रोकने के लिए दवाई छिड़काव संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इसके अलावा कृषि संबंधित खेत में की जाने वाली फसलों की बुवाई को लेकर विस्तार से जानकारी दी गई। इसके अलावा कृषि विभाग के अंतर्गत संपूर्ण योजना की जानकारी अपने क्षेत्र के संपूर्ण किसानों को समय-समय पर फसल संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी किसान सेवा केंद्र के माध्यम से दी जा रहे हैं। शिविर के दौरान आए हुए कृषक मित्र तुलसाराम सिरवी ने मानव जीवन के औषधि फसलों की उपयोगिता की जानकारी कृषकों को दी गई। शिविर के दौरान अनुसूचित जाति के आए हुए कृषक को पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार डॉ देवी सिंह भाटी द्वारा दिया गया। पुरस्कार के प्रथम टेस्ट विजेता प्रकाश केसाराम मेघवाल निवासी सोडावास। जिनको पुरस्कार के रुप में लोहे गेती मय हैंडल सहित दी गई। टेस्ट के द्वितीय विजेता जीवी उमेद राम मेघवाल निवासी सोडावास को पुरस्कार के रुप में फावड़ा दिया गया। टेस्ट के तृतीय विजेता सुमटी पुखराज सरगरा को पुरस्कार के रुप में तगारी दी गई। इस प्रकार शिविर के दौरान आए हुए अनुसूचित जाति के कृषक महिलाएं एवं पुरुषों को कई महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस दौरान उपस्थित कृषक तुलसाराम। कृषक मित्र कैलाश कुमार। कृषक मित्र श्रवण कुमार।ग्राम पंचायत सोडावास पंचायत सहायक करना राम देवासी। राजकीय विद्यालय के कार्मिक हीरालाल सीरवी। ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि रुकमा देवी। पुख़ सिंह राजपुरोहित। श्रद्धद्दस्त्र जोगाराम। मोडाराम। एवं स्थानीय वरिष्ठ पत्रकार दिनेश सिंह राजपुरोहित कुलदीप सिंह उपस्थित रहे।

ग्वालियर में होने वाले वार्षिक विष्णु महायज्ञ को लेकर सेवड़ा में पत्रक प्रचार करते हुए समाजसेवी

अमित शर्मा

ग्वालियर में होने वाले वार्षिक महोत्सव श्री विष्णु महायज्ञ का पत्रक प्रचार सेवड़ा समाज सेवा टीम के संयोजक एवं भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष दतिया श्यामू ठाकुर के नेतृत्व में क्या जा रहा है जो कि सेवड़ा एवं दतिया के ग्राम पंचायतों को आमंत्रित पत्र देते हुए उनको वार्षिक महोत्सव में आमंत्रित किया जा रहा है विष्णु महायज्ञ 16 फरवरी से 24 फरवरी तक चलेगा जिसमें अधिक से अधिक संख्या में श्रद्धालुओं की पहुंचने की संभावना है सेवड़ा दतिया की जिम्मेदारी श्यामू ठाकुर के नेतृत्व में सौंपी गई है जो कि आज विभिन्न ग्राम पंचायतों दरियापुर रसूलपुरा महेवा महाराजपुरा ग्राम वासियों को आमंत्रित किया। और इस बार शर्मा उत्सव श्री विष्णु महायज्ञ में आने के लिए आमंत्रित किया। आपको बता दें कि सेवड़ा समाजसेवी श्यामू ठाकुर धार्मिक कार्य एवं समाज सेवा कार्य में लगे रहते हैं जिसकी प्रशंसा कई वरिष्ठ नागरिक कर चुके है।

पुष्पांजली टुडे
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका में खबर एवं विज्ञापन के लिये सम्पर्क करें
चिराग गुप्ता
संवाददाता दबोह जिला भिण्ड मप्र
मो.9713236955

चर्चगेट रेलवे पुलिस ने पेश की मानवता की मिसाल, आप भी करेंगे सलाम

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो, मुंबई

पुलिस का नाम जुबान पर आते ही तमाम तरह की नकारात्मक छवि उभरकर आपके सामने आती होंगी। हालांकि इन सबके परे मुंबई की चर्चगेट रेलवे पुलिस ने मानवता की मिशाल पेश की है, जानकारी के मुताबिक चर्चगेट रेलवे स्टेशन पर 22 जनवरी को एक अज्ञात व्यक्ति 25 हजार वोट से करंट लगने के कारण बुरी तरह से घायल हो गया,उस व्यक्ति का 70 प्रतिशत से भी ज्यादा शरीर जल चुका था चर्चगेट रेलवे पुलिस उस व्यक्ति को जेजे हॉस्पीटल लेकर गयी जहाँ करीब 6 दिन बाद उस व्यक्ति कि मृत्यु हो गई, उस व्यक्ति ने पुलिस को सिर्फ अजित पैलेस, जोधपुर और डीडवाना कहा था चर्चगेट रेलवे पुलिस ने बिना देर किये पत्रकार गौरव राजपुरोहित कि सहायता से राजस्थान पुलिस से संपर्क कर मृतक व्यक्ति के पिता सहित परिवार वालो का पता लगा दिया पर चर्चगेट रेलवे पुलिस के सामने सबसे बडी समस्या यह थी कि मृतक शख्स के परिवार वालो का एक भी सदस्य मुंबई आने को तैयार नहीं था और परिवार वालो कि आर्थिक स्थिति भी काफी खराब थी, जिसके बाद चर्चगेट रेलवे पुलिस स्टेशन के सिनियर पीआई प्रदीप सालुंखे के निर्देश पर पीएसआई उज्वल आरके ने राजस्थान राज्य के जोधपुर जिले कि एक बूंद जिन्दगी नामक संस्था से संपर्क कर उन्हे इस मामले से अवगत करवाया एक बूंद जिंदगी

संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल बडगुर्जर जी और मुंबई शहर के संवेदना फाऊंडेशन नाम कि संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोक राजपुरोहित ने परिवार वालो को आर्थिक मदद कर मृतक के परिवार वालो को आने जाने में सहयोग किया। चर्चगेट रेलवे पुलिस ने मृतक के पिता व परिवार वालो की बयान पर रिपोर्ट तैयार कर परिवार वालो के हाथो से मृतक का दाहसंस्कार करवाया इस दाहसंस्कार का पूरा खर्च चर्चगेट रेलवे पुलिस ने अपने जेब से किया चर्चगेट रेलवे पुलिस कि दरियादिली को देखते हुए मृतक का पुरा परिवार भावुक होकर चर्चगेट रेलवे पुलिस कि पुरी टीम को धन्यवाद दिया। चर्चगेट रेलवे पुलिस ने मानवता की एक नई मिशाल पेश की है, जिसकी हर कोई तारीफ कर रहा है।

इन्होने की मिशाल पेश: सिनियर पीआई प्रदीप सालुंके, एपीआई आइ एम नदाफ, पीएसआई उज्जवल आरके, एचसी भांगरे, एचसघ घोडके, एचसघ पवार, एचसी जायभाय, डब्लूपीएन कोटेवार ,पीसी रूपेश जाधव,पीसी पाताडे पीसी घेवढे।

यूपी पंचायत चुनाव संग्राम

प्रधान ,बीडीसी और जिला पंचायत सदस्यों की जमानत और चुनाव खर्च की सीमा तय

● पुष्पांजली टुडे, सौरभ भार्गव, मऊरानीपुर, झांसी

मऊरानीपुर । उत्तर प्रदेश पंचायत चुनाव को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में माहौल बनाने का काम शुरु हो गया है। जिसमें प्रधान पद से लेकर बीडीसी सदस्य और जिला पंचायत सदस्य पद के प्रत्याशी अपने- अपने दावों को लेकर वोटरों के चबूतरों पर समय देने लगे है। इस बीच निर्वाचन आयोग की ओर से प्रत्याशियों के लिये एक सुकून भरी खबर मिल रही है। सूत्रों की माने तो इस बार राज्य निर्वाचन आयोग ने प्रत्याशियों की जमा कराई जाने वाली जमानत राशि के साथ ही चुनावी खर्च के दायरे को नही बढाये जाने का फैसला किया है। आपको बता दे कि जो जमानत धनराशि पिछले चुनाव के दौरान विभिन्न पदों के लिये निर्धारित की गई थी।

उसे ही इस बार भी बरकरार रखा जायेगा। खर्च की सीमा में भी कोई बदलाव नही किये जाने के संकेत मिल रहे है। बताया गया है कि राज्य निर्वाचन आयोग ने जो इस बार जमानत धनराशि और खर्च सीमा का निर्धारण किया है। जिला पंचायती राज विभाग से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम प्रधान पद के लिये चुनाव लडने वाले लोगों को 2 हजार रुपये जमानत धनराशि जमा करनी होगी। इसके साथ ही सदस्य ग्राम पंचायत को 500 रुपये , क्षेत्र पंचायत सदस्य को 2 हजार रुपये और जिला पंचायत सदस्य के लिये 4 हजार रुपये जमानत धनराशि जमा करनी होगी। वही अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति, पिछडा वर्ग व महिला प्रत्याशी को सामान्य के लिये निर्धारित की गई जमानत राशि का आधा ही जमा करना होगा। निर्वाचन आयोग ने चुनावी खर्च की सीमा भी तय कर दी गई है। जो लोग चुनाव लडेंगे उनमें प्रधान पद के प्रत्याशियों के लिये 75 हजार, सदस्य ग्राम पंचायत के लिये 10 हजार, क्षेत्र पंचायत के लिये 75 हजार और जिला पंचायत सदस्य पद के लिये सर्वोधिक डेढ लाख रुपये चुनाव के दौरान खर्च करने की गाईड लाईन तैयार की गई है। बताया गया है कि प्रत्याशी का खर्च नामांकन करने के बाद से ही जोडा जाना शुरु हो जायेगा। आयोग की ओर से जारी निर्देशों के तहत नामांकन से लेकर परिणाम घोषित होने तक हुये व्यय का लेखा जोखा प्रत्याशी को तैयार रखना होगा। परिणाम घोषित होने के बाद तीन माह के भीतर खर्च का ब्योरा प्रत्याशी प्रस्तुत करेगें। निर्वाचन आयोग की ओर से पहले की तरह ही इस व्यवस्था को कायम रखा गया है। अभी तक इसमें नया किसी प्रकार का बदलाव नही किया गया है।

मां वीणा वादिनी का अवतरण दिवस है वसंत पंचमी

“ बसंत ऋतु में प्रकृति नया श्रृंगार करती है। खेतों में झूम उठते हैं सरसों के फूल, किसानों के चेहरे भी खुशी से चमक उठते हैं। आम के पेड़ों पर बौर फूटने लगते हैं, कलियां धीरे-धीरे खिलती हुई मधुर मधु के प्यासे भौरों को आकृष्ट करने लगती हैं। बेलों पर नए फूल खिल उठते हैं। रंगबिरंगे फूलों से धरती खिल उठती है। प्रकृति की वासंती चादर और सुशोभित वसुंधरा, चारों और एक अजीब सी मस्ती और मादकता से सुवासित हो जाती है। मानव के प्रेमी हृदय में खुमार की मस्ती छाने लगती है।

वसंत पंचमी हरीतिमा चादर में लिपटी भारत भूमि के प्राकृतिक श्रृंगार की मनोहर छटा का नव उल्लास। मां वीणा वादिनी का अवतरण दिवस। यही तो है ऋतुराज वसंत का दिन। जो चारों दिशाओं में अनुरंजित है। प्रकृति तो जैसे कलरव गान करने को आतुर है। हर मानवीय चेहरे पर सुहावने मौसम की झलक का प्रादुर्भाव। सब कुछ नया। तभी तो कहा जाता है कि वसंत ऋतुओं का राजा है। कहा जाता है कि जिसके जीवन में वसंत की कौंपलें नहीं आतीं, वह कभी नया नहीं सोच सकता। नया सृजन भी नहीं कर सकता। वसंत पंचमी को एक प्रकार से माता सरस्वती का संगीतमय अभिवादन निरूपित किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रकृति पुराना आवरण उतारकर नए रूप में आती है। तभी तो कहा जाता फूल खिले हैं हर गुलशन में, धरती पर हरियाली छाई, कोयल छेड़ती मधुर तान, चेहरों पर खुशी मुस्काई। पतझड़ बीत गया, बहार आ गई है। जब फूलों पर बहार आ जाती है, खेतों में सरसों का सोना चमकने लगता है, जौ और गेहूँ की बालियाँ खिलने लगती हैं, आमों के पेड़ों पर बौर आ जाती है और हर तरफ तितलियाँ मँडराने लगती हैं, तब वसंत पंचमी का त्योहार आता है। इसे ऋषि पंचमी भी कहते हैं। ऐसा लगता है जैसे धरती पर फूलों का श्रृंगार करती बारात आई है। इसलिए सभी ऋतुओं में वसंत ऋतु का महत्व सर्वाधिक होता है। यह ऋतुओं का राजा है। यह प्राकृतिक रूप से बहुत ही उत्साह भरे उत्सव का भी दिवस है। वसंत पंचमी का दिन सर्वश्रेष्ठ इसलिए भी है, क्योंकि यह दिवस श्रेष्ठ मुहूर्त का दिन है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति प्राकृतिक जीवन जीता है यानी प्रकृति के साथ चलता है, प्रकृति उसका साथ देती है। भारतीय समाज सदैव से प्रकृति पूजक रहा है। आज इस धारणा को और ज्यादा इसलिए भी विस्तारित करने की आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान में प्रकृति के साथ जिस प्रकार से खिलवाड़ किया जा रहा है, वह मानव जीवन के लिए विनाश का रास्ता तैयार कर रहा है।वसंत पंचमी का दिवस हिंदी पंचांग के अनुसार माघ महीने की पंचमी तिथि को मनाया जाता हैं, इस दिन से वसंत ऋतु का प्रारम्भ होता हैं। प्राकृतिक रूप में भी बदलाव महसूस होता है। इस दिन पतझड़ का मौसम खत्म होकर हरियाली का प्रारम्भ होता हैं। इन दिनों प्राकृतिक बदलाव होते हैं जो बहुत मन मोहक एवम सुहावने होते हैं। इस

ऋतु में कई त्यौहार मनाये जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट करते हुए कहा है कि मैं ऋतुओं में वसंत हूं। श्रीकृष्ण का यह कथन ही स्पष्ट करता है कि माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि से प्रारंभ होने वाला बसंत ऋतु का क्या महत्व है। आज के दिन को भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता हैं जिसमें मुख्य रूप से बसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, वागीश्वरी जयंती, रति काम महोत्सव, बसंत उत्सव आदि है। आज के ही दिन सृष्टि के सबसे बड़े वैज्ञानिक के रूप में जाने जाने वाले ब्रह्मदेव ने मनुष्य के कल्याण हेतु बुद्धि, ज्ञान विवेक की जननी माता सरस्वती का प्राकट्य किया था। मनुष्य रूप में स्वयं की पूर्णता के परम उद्देश्य का साधन मात्र और एक मात्र भगवती सरस्वती के पूजन का ही है। इसलिए, आज के ही दिन माताएं अपने बच्चों को अक्षर आरंभ भी कराना शुभप्रद समझती हैं। साहित्य साधकों के वसंत पंचमी का दिन एक बड़े उत्सव के समान है। हर साहित्य साधक अपनी रचना का प्रारंभ करने से पूर्व मां सरस्वती को याद करता है। इतना ही नहीं किसी भी साहित्यिक आयोजन का प्रारंभ भी माता सरस्वती की आराधना से ही होता है। जिस व्यक्ति पर माता सरस्वती की कृपा होती है, उसका साहित्यिक पक्ष उतना ही श्रेष्ठ होता है। हम जानते हैं कि इसी दिवस पर माँ वीणा वादिनी के वरद पुत्र महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का भी जन्म दिन है। निराला जी के साहित्य में हमें वह सब पढ़ने को मिल जाता है, जो एक सरस्वती पुत्र के साहित्य में होनी चाहिए। वसंत पंचमी का त्योहार भारत के प्रमुख त्योहारों में समाहित है। इस दिन पीले रंग का अत्यधिक महत्व होने के कारण व्यक्ति पीत परिधान पहनता है। महिलाएं भी पीले परिधान पहनकर प्रकृति की पूजा आराधना करती हैं। इतना ही नहीं हर परिवार में भोग लगाने के पीले रंग के पकवान बनाए जाते हैं। वसंत का आशय है खुशी। यह खुशी हमारे मन के अंदर विद्यमान है, जिसे प्रकट करना चाहिए और समाज के बीच भी प्रसन्न रहने का संदेश देना चाहिए।

ग्वालियर रियासत के एक नए युग की शुरूआत

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
9406502099

औलतराव सिंधिया का विवाह कोल्हापुर क्षेत्र के एक जागीदार सरकार सर्जेराव घाटवों की 14 वर्षीय पुत्री बैजाबाई से पुणे में हुआ। इस विवाह में पेशवा भी शामिल हुआ। उस समय जब दौलतराव अंग्रेजों से उलझा हुआ था सरदार सजैराव घाटगे ने दौलतराव और उसकी विभाताओं (महादजी सिंधिया की विधवा बाइयों) के बीच मतभेद पैदा कर दिये। बात इतनी बढ़ गई कि विभाताएं दौलतराव के विरुद्ध हो गईं। महादजी के विश्वस्त रहे सरदार लखवा दादा ने जब विभामाओं का पक्ष लिया तो दौलतराव ने उसे अपनी सेना से हटा दिया। तब लखवा दादा अपनी सेना के साथ विभाताओं को लेकर दतिया नरेश शत्रुजीत के यहां पहुंचे। शत्रुजीत ने सहानुभूति दिखाते हुए लखवा दादा और विभाताओं को सुरक्षा के साथ सेवढ़ा के किले में ठहरा दिया। इससे दौलतराव आग बबूला हो उठा और उसने अपने मंत्री अम्बाजी इंग्ले को लखवा दादा से निपटने सेवढ़ा भेजा। उस समय लखवा दादा की अपनी सेना के साथ झांसी के सूबेदार शिवराम भाऊ का सहयोग और दतिया नरेश शत्रुजीत की सेना का बल भी शामिल था। स्वयं दतिया नरेश शत्रुजीत भी अम्बाही इंग्ले की यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित सेना से भिड़ने सेवढ़ा जा पहुंचा। लखवा दादा का पक्ष हर तरफ से मजबूत होने के बावजूद वह यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित सिंधिया की सेना के आगे टिक नहीं सका। घायलावस्था में लखवा दादा विभाताओं को लेकर दतिया निकल गया। लेकिन इस लड़ाई में दतिया राज्य को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। रणभूमि में गंभीर रूप से घायल दतिया नरेश शत्रुजीत को प्राण गंवाने पड़े। लेकिन दौलतराव सिंधिया की सेना को भी यह संघर्ष इतना भारी पड़ा कि फिर उसकी सेना की दतिया की तरफ जाने की हिम्मत नहीं हुई। बाद में अम्बाजी इंगले ने दौलतराव की ओर से लखवा दादा और विभाताओं से चर्चा की और एक समाधान संधि से इस विवाद को खत्म किया। सरदार सुर्जेराव घाटगे द्वारा लगाई गई इस पारिवारिक आग से दौलतराव तो जैसे-तैसे बच निकला। लेकिन उसकी मृत्यु के बाद यही घटनाक्रम उसकी पत्नी और सरदार सुर्जेराव घाटगे की पुत्री महारानी बैजाबाई तथा जनकोजी राव के बीच रिपीट हुआ, जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

सन् 1974 से 1827 तक ग्वालियर के शासक रहे दौलतराव सिंधिया ने मराठों के हर संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग लिया। लगभग 19 वर्ष की आयु में महादजी सिंधिया के उत्तराधिकारी के रूप में जिस पराक्रमी मराठा सरदार के उभरने की

उम्मीद लगाई जा रही थी, दौलतराव सिंधिया ने उससे कहीं बढ़कर पराक्रम दिखाने की कोशिश की परन्तु मराठा सरदारों के बीच आपसी कलह और कमजोर पेशवा के कारण मराठों का पतन शुरू हो चुका था। अंग्रेजों के साथ द्वितीय मराठा युद्ध (1803-05) में मराठों की हार और महादजी के जमाने से चला आ रहा होल्कर सिंधिया वैमनस्य दोनों ही मराठा सरदारों के लिए आत्मघाती सिद्ध हुआ। सन् 1817-19 में हुए तीसरे अंग्रेज-मराठा युद्ध ने तो मराठों के पराक्रम पर विराम ही लगा दिया। अपने इस संघर्ष की यात्रा में दौलतराव सिंधिया ने होल्कर के इंदौर से दूर 1810 में ग्वालियर को अपना नया ठिकाना बनाया। ग्वालियर किले के दक्षिण में नए नगर लश्कर की बसावट शुरू हुई और धीरे-धीरे उज्जैन की जगह ग्वालियर ने सिंधिया रियासत की राजधानी का रूप ले लिया। दौलतराव ने जिस भवन को अपना आवास बनाया, उसमें वर्तमान में कमलाराजा महाविद्यालय संचालित है। इंदौर से दूर चले आने के बाद भी दौलतराव की परेशानियां दूर नहीं हुईं। सन् 1813 में गवर्नर जनरल बनतेही लार्ड हैस्टिगन ने पिण्डारियों का साथ देने के नाम पर दौलतराव पर शिकंजा कसा। इससे दौलतराव पहले तो क्रोधित हुआ किन्तु स्थिति भांपकर 5 नवंबर 1817 को उसने अंग्रेजों से एक नई संधि कर ली। इस संधि में उसने पिंडारियों के खिलाफ पूर्ण सहयोग का वचन दिया। इसके बाद 1818 में अंग्रेजों के साथ दौलतराव ने दूसरी संधि की जिसमें अंग्रेजों ने दौलतराव के क्षेत्र की सीमाओं का फिर से समायोजन किया। इस समायोजन में ग्वालियर क्षेत्र से दूर दराज के भूभाग, जिसमें अजमेर भी शामिल थे ले लिए गए और उनके स्थान पर नरवर, शिवपुरी, और मालवा क्षेत्र के कुछ भू-भाग पर ग्वालियर क्षेत्र में शामिल कर दिए गए। इस समायोजन से ग्वालियर रियासत का जो स्वरूप बना, लगभग वहीं आगे भी जारी रहा। लगभग यही स्थिति होल्कर और अंग्रेजों के बीच रही। लेकिन 1818 में ग्वालियर रियासत की जो संरचना हुई उस पर सिंधिया स्टेट के शासक के रूप में दौलतराव सिंधिया ने मृत्युपर्यन्त अंग्रेजों के आश्रित के रूप में राज्य किया। मालवा में होल्कर और देवास में पंवार भी अंग्रेजों के आश्रित के रूप में शासक बने। इस तरह होल्कर और सिंधिया के वमनस, अंग्रेजों का आश्रित बनने पर ही खत्म हुई और इंदौर और ग्वालियर रियासत के एक नए युग की शुरूआत भी यही से हुई।

जीएसटी के एक्सपर्ट बनना चाहते हैं, तो करें यह कोर्सेज

बिगनर कोर्स को आप डिप्लोमा भी समझ सकते हैं, जिसके लिए आपको 12वीं पास करना आवश्यक होता है। इसमें आपको 24 से 48 घंटे तक की क्लास रूम ट्रेनिंग दी जाती है और तमाम जीएसटी के बेसिक्स की जानकारी आपको दी जाती है। सामान्य तौर पर यह कोर्स 5000 तक आपको मार्केट में उपलब्ध हो जाता है। भारतवर्ष में टैक्स सुधार की दिशा में जीएसटी एक बड़ा कदम माना गया। गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स, यानी वस्तु एवं सेवा कर, अपने आप में एक बड़ा क्रांतिकारी कदम था और पूरे देश में एक समान टैक्स की व्यवस्था करने में इसकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता है। इसके पहले कई तरह के टैक्सेज थे, जो अलग-अलग जगहों पर लगते थे और उसकी वजह से लालफीताशाही भी खूब फलती फूलती थी।साथ ही जीएसटी आने के बाद अब ऐसे प्रोफेशनल्स की भी भारी डिमांड हो चुकी है, जो इन कोर्सेज में विशेषज्ञ हों, जो समझ सकें और समझा सकें कि कस्टमर के लिए क्या बेहतर है और क्या लाभकारी नहीं है, खासकर टैक्स के मामले में! 29 मार्च 2017 को यह एक्ट हमारी पार्लियामेंट से पास हुआ, तो 1 जुलाई 2017 से यह पूरे देश में लागू कर दिया गया। छोटे व्यापारियों के लिए यह काफी बेहतर माना गया, क्योंकि तमाम सरकारी फॉर्मेलिटी और परमिशन लेने के प्रोसेसेस इसमें काफी कम किए गए हैं। साथ ही लॉजिस्टिक भी इससे आसान ही हुआ है, तो असंगठित क्षेत्र भी रेगुलेट होने की दिशा में मजबूती से बढ़ चला है। ऐसे में क्या आप भी इस फील्ड के एक्सपर्ट बनना चाहते हैं? आइए देखते हैं इसकी डिटेल्स, लेकिन उससे पहले आप जान लें कि जीएसटी में मुख्य रूप से कौन-कौन से काम शामिल किए जाते हैं।जीएसटी

ट्रांजैक्शंस का रजिस्ट्रेशन इसमें सबसे पहले आता है। जी हां! इस कार्य में अगर 20 लाख से अधिक आपका टर्नओवर है तो आप एक टैक्सेबल सिटीजन के तौर पर जीएसटी रजिस्ट्रेशन कराने के योग्य हो जाते हैं। ध्यान रहे, अगर इस लिमिट पर आप नहीं कराते हैं, तो फिर आप पर पेनाल्टी लग सकती है।इसके बाद जीएसटी रिटर्न की बात आती है। इसमें अलग-अलग फॉर्म होते हैं, जिसमें सेल, परचेज और दूसरे टैक्स इत्यादि की डिटेल भरनी होती है।इसके बाद तीसरा जो काम आता है वह जीएसटी एकाउंटिंग का काम होता है। इसमें बारीकी से कैलकुलेशन को चेक किया जाता है और विभिन्न बिजनेस और आपकी संस्था की विशेष जरूरतों को पूरा करने की प्रक्रिया करनी होती है। इसके बाद चौथे नंबर पर जीएसटी रिकॉर्ड की बात आती है। ज़ाहिर तौर पर यहां रिकॉर्ड मेंटेन किया जाता है। इसे ड्राफ्ट रिकॉर्ड्स रूल्स भी कहते हैं, जिसमें एडिशनल जीएसटी अकाउंटिंग और रिकॉर्ड कीपिंग रिक्वायरमेंट शामिल किया जाता है। जाहिर तौर पर यह सारी चीजें अगर आप सीख लेते हैं तो आपको मार्केट में अच्छी खासी अपॉर्चुनिटी मिलने की संभावना प्रबल हो जाती है। पर प्रश्न उठता है कि कौन से कोर्सेज इसके लिए बेहतर है?बिगनर कोर्स को आप डिप्लोमा भी समझ सकते हैं, जिसके लिए आपको 12वीं पास करना आवश्यक होता है। इसमें आपको 24 से 48 घंटे तक की क्लास रूम ट्रेनिंग दी जाती है और तमाम जीएसटी के बेसिक्स की जानकारी आपको दी जाती है। सामान्य तौर पर यह कोर्स ?5000 तक आपको मार्केट में उपलब्ध हो जाता है। इसके बाद आप जीएसटी इंटरमीडिएट कोर्स कर सकते हैं। जी हां! बिगनर कोर्स के बाद यह कोर्स आपके सामने आता है और प्रैक्टिकल जानकारी आपको इसमें प्रदान की जाती है। अकाउंट्स और मैनेजर के लिए भी यह कोर्स काफी अच्छा माना जाता है, और ई लर्निंग के माध्यम से इस कोर्स को पूरा किया जा सकता है। तकरीबन 60 घंटे तक, इसकी ट्रेनिंग पर्याप्त होती है। बलगभग ?6000 में यह कोर्स अवेलेबल है। इसे भी 12वीं पास बच्चे कर सकते हैं। इसमें मैथमेटिकल कंप्यूटेशन भी शामिल होता है।

कोरोना महामारी के दौर में बोर्ड एग्जाम की तैयारी के लिए टिप्स

कोरोना महामारी ने जिन सेक्टर्स को सर्वाधिक डिस्टर्ब किया है, उनमें से एजुकेशन सेक्टर प्रमुख है। अगर यह कहा जाए कि पूरे साल को कोविड-19 ने, एजुकेशन के लिहाज से बर्बाद कर दिया, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऑनलाइन क्लासेज के माध्यम से कुछ स्कूल और दूसरी शैक्षणिक संस्थाएं बच्चों को पढ़ाने की कोशिश जरूर करती दिखीं, परंतु स्कूलों में होने वाली पढ़ाई और वहां मिलने वाला पढ़ाई का माहौल, अगर घर पर ही मिल जाए, तो फिर स्कूल की जरूरत ही क्यों पड़े? परंतु हकीकत यह है कि बावजूद तमाम मुसीबतों के 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं की तिथि सीबीएसई द्वारा घोषित हो चुकी है। 4 मई से 10 जून तक यह परीक्षाएं चलेंगी और इसका परिणाम जुलाई में घोषित करने के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने तैयारी कर ली है। ऐसे में बच्चों के सर पर एग्जाम का बोझ तो आ ही गया, बेशक उनकी पढ़ाई हुई हो या नहीं! मतलब परीक्षाएं होंगी। हालांकि इसके लिए अभी समय जरूर है, पर अगर आज से ही सजगता नहीं बरती गई, तो इसके परिणाम बहुत बेहतर नहीं आएंगे और इस बात का यकीन जितनी जल्दी से जल्दी कर लिया जाए, तो बेहतर रहेगा!

टाइम टेबलः जी हां! कहते हैं कि संसार में एक समय ही ऐसी चीज है, जो कभी रुकता नहीं है! अगर आपने बी.आर. चोपड़ा द्वारा निर्मित महाभारत के एपिसोड देखे हैं,

तो उसमें मैं समय हूं का मशहूर संवाद अवश्य ही सुना होगा। सच तो यह है कि अगर आप समय की कीमत नहीं समझते हैं, तो सामान्य दिनों में भी आप बहुत अच्छा परिणाम नहीं ला सकते हैं, और हाल फिलहाल तो कोरोना वायरस आपका आधा समय यूं ही निकाल चुका है। टीचर, ग्रुप स्टडी और दोस्तों के साथ पढ़ाई से आप एक तरह से वंचित हो चुके हैं, इसलिए समय प्रबंधन आवश्यक ही नहीं, अति आवश्यक है। अब टाइम टेबल के अनुसार विषय वाइज पढ़ाई कीजिए और इससे निश्चित रूप से परीक्षा हाल में आपको बेहतर परिणाम दिखेगा स्कूल जाने पर आप ना चाहते हुए भी काफी कुछ पढ़ लेते थे, शारीरिक भाग दौड़ भी हो ही जाती थी, किंतु लॉकडाउन में और उसके बाद स्कूल नहीं खुलने से आप कहीं आलसी तो नहीं हो गए हैं सुबह जगने से लेकर, नाश्ता, पौष्टिक भोजन और शाम को थोड़ा बहुत टहलने से लेकर, सही समय पर सोना आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। और हां! सुबह सुबह व्यायाम करने से आपका पूरा दिन तरोताजा रहता है और इससे आप तो बेहतर स्टडी अवश्य कर सकते हैं। एक बार पुनः इस बात को दोहरा लीजिए कि बगैर उत्तम हेल्थ के आपका पढ़ाई में मन ही नहीं लगेगा और किताब खोल कर बेशक आप बैठे रहें, परंतु आपको, आप ही के मन मस्तिष्क द्वारा बेहतर परिणाम नहीं प्राप्त होगा।लॉकडाउन में आप इंटरनेट की मदद लेना तो सीख ही गए होंगे, किंतु इंटरनेट पर कितना भटकाव है, यह भी आप महसूस अवश्य कर चुके होंगे। पहले आपने सोशल मीडिया इत्यादि पर समय नुकसान किया ही होगा।

वॉयस ओवर क्षेत्र में भी बना सकते हैं कॅरियर

वॉयस-ओवर, जिसे ऑफ-कैमरा या ऑफ-स्टेज कमेंट्री के रूप में भी जाना जाता है, एक उत्पादन तकनीक है, जहां एक आवाज- जो कि कहानी का हिस्सा नहीं है- एक रेडियो, टेलीविजन उत्पादन, फिल्म निर्माण, थिएटर या फिर किसी और प्रेजेंटेशन में उपयोग किया जाता है।क्या आपकी आवाज़ मधुर और प्रभावशाली है? क्या आपको अपनी आवाज़ से प्यार है? यदि हाँ, तो आप निःसन्देह वॉयस-ओवर फील्ड में अपना कॅरियर आज़मा सकते हैं और वॉयस-ओवर-आर्टिस्ट होकर कुछ बड़ा पैसा कमाने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। तो आइये इसके बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करते हैं।

वॉयस-ओवर क्या है?

वॉयस-ओवर, जिसे ऑफ-कैमरा या ऑफ-स्टेज कमेंट्री के रूप में भी जाना जाता है, एक उत्पादन तकनीक है, जहां एक आवाज- जो कि कहानी का हिस्सा नहीं है- एक रेडियो, टेलीविजन उत्पादन, फिल्म निर्माण, थिएटर या फिर किसी और प्रेजेंटेशन में उपयोग किया जाता है। वॉयस-ओवर प्रायः किसी मौजूदा संवाद के अलावा जोड़ा जाता है। यह पेशेवर ऑडियो के एक भाग के रूप में आवाज़ प्रदान करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। यह गेमिंग, वीडियो, कार्टून, विज्ञापनों आदि के लिए इस्तेमाल किया जाता है। तकनीकी रूप से कहा जाए तो वॉइस-ओवर-आर्टिस्ट की मुख्य ज़िम्मेदारी लिखित शब्द को ऑडियो या वॉइस में बदलना है। इसके लिए बोलने और संवाद की कला प्रमुख है।

वॉयस-ओवर आर्टिस्ट कौन होते हैं?

हम पूरे दिन आवाज़ें सुनते हैं, चाहे वह मेट्रो रेल घोषणाएं हों, विज्ञापन अभियान हो या रेडियो सुन रहे हों या फिर

फोन पर हेल्पलाइन पर कॉल करते समय हो। लेकिन क्या आपने नोटिस किया है कि ये शांत और सुरीली आवाज़ किसकी है? वे वॉइस-ओवर-आर्टिस्ट हैं। वॉयस-ओवर कलाकार एनिमेटेड फिल्मों, वृत्तचित्रों और टेलीविजन शो के लिए आवाज़ प्रदान करते हैं और टेलीविजन और रेडियो विज्ञापनों में वॉयस-ओवर करते हैं। वॉयस-ओवर कलाकार एनिमेटेड पात्रों के लिए आवाजें प्रदान करते हैं, जिनमें फीचर फिल्में, टेलीविजन कार्यक्रम, एनिमेटेड लघु फिल्में और वीडियो गेम शामिल हैं। ये ऐसे लोग हैं जो अपने दैनिक जीवन में एक बदलाव लाने के लिए अपनी मेहनत और प्रयास इन आवाज़ों को दर्ज करने के लिए करते हैं। जिस डिजिटल समय में हम रहते हैं, उसमें वॉयस-ओवर कलाकारों का महत्व और प्रभुत्व बढ़ रहा है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि आजकल वॉइस-ओवर-कलाकार के रूप में कॅरियर को युवाओं के लिए एक शानदार विकल्प माना जाता है।

वॉयस-ओवर-आर्टिस्ट कैसे बनें?

सामान्यतया, वॉयस-ओवर आर्टिस्ट बनने के लिए अच्छी आवाज़ ही एकमात्र पात्रता मानदंड होता है। हालांकि, यह बहुत आसान लग सकता है, लेकिन जब यह वास्तव में एक वीडियो या एक चरित्र के लिए वॉइस-ओवर करने की बात आती है, तो कई चीजें हैं जो सामने आती हैं। लेकिन, मुख्य रूप से एक अच्छी आवाज और विभिन्न प्रकार के वॉयस मॉड्यूलेशन पर नियंत्रण वॉयस-ओवर आर्टिस्ट बनने के लिए प्राथमिक आवश्यकताएं होती हैं। साथ ही साथ आपको भाषा और व्याकरण का अच्छा ज्ञान होना चाहिए और उच्चारण पर उचित नियंत्रण। इसके लिए आप कुछ अभिनय पाठ्यक्रम का चुनाव कर सकते हैं, जहाँ से आपको एक अभिनय की डिग्री प्राप्त हो सके, क्योंकि वॉइस-ओवर काम का एक बड़ा हिस्सा अनिवार्य रूप से अभिनय कार्य ही है।

वेब डिजाइनिंग के क्षेत्र में कॅरियर का निर्माण कैसे करें

वेब डिजाइनिंग आज के आईटी क्षेत्र का एक अभिन्न अंग है। वेब डिजाइनिंग का उपयोग वेबसाइटों के निर्माण और योजना के लिए किया जाता है। सामान्यतया, वेब डिज़ाइन किसी भी वेबसाइट की विकास प्रक्रिया से डील के बारे में है। वेब डिज़ाइन वेबसाइटों के उत्पादन और रखरखाव में कई अलग-अलग कौशल और विषयों को शामिल करता है। वेब डिज़ाइन के विभिन्न क्षेत्रों में वेब ग्राफिक डिज़ाइन, उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस डिजाइन, मानकीकृत कोड और मालिकाना सॉफ्टवेयर सहित संलेखन, उपयोगकर्ता अनुभव डिजाइन, और सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन शामिल हैं। वेब डिजाइनिंग आज के आईटी क्षेत्र का एक अभिन्न अंग है। वेब डिजाइनिंग का उपयोग वेबसाइटों के निर्माण और योजना के लिए किया जाता है। सामान्यतया, वेब डिज़ाइन किसी भी वेबसाइट की विकास प्रक्रिया से डील के बारे में है। कॅरियर के नजरिए से आईटी उद्योग में कॅरियर शुरू करने के लिए वेब डिजाइन एक अच्छा विकल्प और अवसर है। वेब डिजाइनर अपनी ऑनलाइन पहचान स्थापित करने के लिए वेबसाइट, वेब पेज और

सरकारी या गैर-सरकारी संगठनों, व्यवसायों, उद्योगों और कॉर्पोरेट फर्मों के लिए वेब एप्लिकेशन डिज़ाइन करते हैं वेबसाइट संरचना बनाने के लिए एक वेब डिजाइनर कई चीजों का उपयोग करता है, जैसे कि टेक्स्ट, सूचना वास्तुकला, चित्र, फ़ॉन्ट, रंग, ॥झस्स्ः मार्कअप भाषा और अन्य इंटरैक्टिव तत्व। दूसरे शब्दों में वेब डिजाइनिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक वेब डिजाइनर विज़िटर्स को एक ही मंच पर कई लिंक, चित्र, ग्राफिक्स, आदि के साथ वेब पेज तक पहुंचने में सक्षम बनाता है। वेब डिजाइनर किसी भी तरह की वेबसाइट पर काम करते हैं, एक इंटरैक्टिव शिक्षा साइट से लेकर खरीदारी की ऑनलाइन साइट तक। ग्राहकों से इस बात पर चर्चा करने के लिए कि वे अपनी साइट को क्या करना चाहते हैं और इसका उपयोग कौन करेगा एक डिजाइन योजना तैयार करना, साइट की संरचना को दिखाना और विभिन्न भागों को एक साथ जोड़ना डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स में प्रवेश लेने के लिए उम्मीदवारों को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से किसी भी स्ट्रीम में 10 वीं कक्षा या 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।स्नातक की डिग्री में प्रवेश लेने के लिए उम्मीदवारों को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से किसी भी विषय में 12 वीं कक्षा या समकक्ष परीक्षा (डिप्लोमा / प्रमाणन) उत्तीर्ण होना चाहिए।पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए उम्मीदवारों के पास किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज / संस्थान / विश्वविद्यालय से किसी भी स्ट्रीम में स्नातक की डिग्री होनी चाहिए।

माली परिवार की ओर से सभी जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

फ्लावर हाऊस

मालियो के मंदिर के पास जिला श्योपुर
निखिल माली
मो. 81204382885, 9826842209

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

शिवहरे कफेशनरी स्टोर

प्रेम शिवहरे
न्यू बस स्टैंड जिला श्योपुर
मो. 8962625249

मोठपुर वाले सोनी परिवार की ओर से गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

गायत्री किशन सोनी

भाजपा नगर मंडी मंत्री
जिला श्योपुर, 9752828386

रामलखन बंजारा वालों की ओर से गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

रामलखन बंजारा वर्धा वाले

पता : सेंटपायज स्कूल के पास आटा
मिल के सामने जिला श्योपुर
मो. 9926263585

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

सतीश इंटरप्राइजेज

प्रो. सतीश गर्ग, 9826889555
हमारे यहां पंखे कूलर, इन्वेंटर, फिटिंग व लाइट फिटिंग का कार्य
संतोषजनक किया जाता है
पता : माधव मंडपम के सामने पाली रोड जिला श्योपुर

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

राजेन्द्र सिंह राजपूत

वरिष्ठ लिपिक कलेक्ट्रेट
एटा, मो. 9761901014

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

जितेन्द्र कुमार सिंह

न्यायिक सदस्य प्रथम श्रेणी
जूडिशियल मजि. किशोर न्याय बोर्ड
जनपद न्याय एटा

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

नरेन्द्र सिंह उर्फ राजा भईया

डीलर मो. 9457618161
महेन्द्र शर्मा

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

उपेन्द्र कुमार चौहान

वरिष्ठ लिपिक कलेक्ट्रेट
एटा, मो. 9627321806

जिलेवासियों को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

प्रवीन दिवाकर

प्रधान प्रतिनिधि
ग्राम पोस्ट नरोरा तहसील जिला एटा.
मो. 7017968311

मधुमेह ने एक बार पकड़ा तो फिर छोड़ेगा नहीं, इस तरह बचें

आजकल के इस भागदौड़ भरे युग में अनियमित जीवनशैली के चलते जो बीमारी सर्वाधिक लोगों

को अपनी गिरफ्त में ले रही है वह है मधुमेह। मधुमेह को धीमी मौत भी कहा जाता है। यह ऐसी बीमारी है जो एक बार किसी के शरीर को पकड़ ले तो उसे फिर जीवन भर छोड़ती नहीं। इस बीमारी का जो सबसे बुरा पक्ष है वह यह है कि यह शरीर में अन्य कई बीमारियों को भी निमंत्रण देती है। मधुमेह रोगियों को आंखों में दिक्कत, किडनी और लीवर की बीमारी और पैरों में दिक्कत होना आम है। पहले यह बीमारी चालीस की उम्र के बाद ही होती थी लेकिन आजकल बच्चों में भी इसका मिलना चिंता का एक बड़ा कारण हो गया है। जब हमारे शरीर के पैंक्रियाज में इंसुलिन का पहुंचना कम हो जाता है तो खून में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है। इस स्थिति को डायबिटीज कहा जाता है। इंसुलिन एक हार्मोन है जोकि पाचक ग्रंथि द्वारा बनता है। इसका कार्य शरीर के अंदर भोजन को एनर्जी में बदलने का होता है। यही वह हार्मोन होता है जो हमारे शरीर में शुगर की मात्रा को कंट्रोल करता है। मधुमेह हो जाने पर शरीर को भोजन से एनर्जी बनाने में कठिनाई होती है। इस स्थिति में ग्लूकोज का बढ़ा हुआ स्तर शरीर के विभिन्न अंगों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देता है। यह रोग महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है। मधुमेह ज्यादातर वंशानुगत और जीवनशैली बिगड़ी होने के कारण होता है। इसमें वंशानुगत को टाइप-1 और अनियमित जीवनशैली की वजह से होने वाले मधुमेह को टाइप-2 श्रेणी में रखा जाता है।

कम कीमत में पाए गज़ब का निखार

आज के समय हर कोई इतना बिजी रहने लगा है की उनके पास ज़रा भी टाइम नहीं रहता है, फिर चाहे वो महिलाएँ हो या पुरुष, लगातार नज़रअंदाज़ होने के कारण महिलाओ की स्किन रूखी और बेजान हो जाती है, जिससे उनके चेहरे का रंग सांवला होने लगता है. कई महिलाएँ समय बचाने के लिए फेयरनेस क्रीम्स का इस्तेमाल करती है पर इससे भी कोई फायदा नहीं होता है,. इसलिए आज हम आपको एक ऐसा तरीका बताने जा रहे है जिसके इस्तेमाल से आपकी स्किन ग्लोइंग हो जाएगी और समय के साथ साथ आपके पैसे भी बच जायेगे.

अपने स्किन में निखार लाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में थोड़ा सा बेसन ले ले, अब इसमें एक चुटकी हल्दी मिलाये और इसे कच्चे दूध की सहयता से गाढ़ा गोल कर पेस्ट बना ले, अब इस पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन पर अच्छे से लगाए. और जब ये सूख जाये तो इसे ठन्डे पानी से धो ले, अगर आप हफ्ते में 4 बार इस पैक का इस्तेमाल करती है तो इससे आपकी स्किन में गज़ब का ग्लो आ जायेगा, इसके अलावा आप दही में नींबू का रस मिलाकर भी चेहरे पर लगा सकते है. इससे भी आपका रंग गोरा हो जायेगा और स्किन के सभी दाग-धब्बे दूर हों जायेगे.

हर्बल फेशियल से बढाए अपनी खूबसूरती

अपने चेहरे की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए लड़कियाँ अपने चेहरे पर कई तरह फेशियल करवाती है, पर इन फेशियल्स में केमिकल की भरपूर मात्रा मौजूद होती है. जिससे आपके चेहरे को काफी नुकसान भी हो सकता है. इसलिए आज हम आपको आपके चेहरे को सुंदर और ग्लोइंग बनाने के लिए आप घर पर हर्बल फेशियल करने के तरीके के बारे में बताने जा रहे है.

सामग्री

आलू- 1,पपीता- 1/4 कप ,ओट्स या राइस पाउडर- 2-3 टीस्पून,ग्रीन टी बैग- 3,आइस क्यूब,शहद- 2-3 टीस्पून कोकोनट मिल्क- 1/2 कप (ड्राई स्किन),संतरे का रस- 1/2 कप (ऑयली स्किन),केला- 1/2 कप ,जैतून का तेल- 2 टीस्पून,बादाम तेल- 2 टीस्पून,ठंडा पानी,स्ट्रॉबेरी- 4

फेशियल करने का तरीका

1- स्किन की गंदगी और टैनिंग निकालने के लिए सबसे पहले अपने चेहरे को साफ पानी से धो ले और फिर इसके बाद आलू के एक टुकड़े को काटकर अपने चेहरे पर 5 मिनट तक रगड़े. चेहरे पर आलू रगड़ने के बाद स्किन को टिशू पेपर को गीला करके साफ कर लें.

2- अब एक बाउल में पपीता और ओट्स या राइस पाउडर को मिलाकर पेस्ट बना ले और इसे अपने चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से 2 मिनट तक रब करें. और फिर इसे 5 मिनट तक ऐसे ही छोड़ दे और फिर रुई की मदद से चेहरा साफ कर लें.

3- स्किन के रोम छिद्रो को ओपन करने के लिए टी बैग को पानी में उबाले और फिर इससे अपने चेहरे पर भाप ले, और उसके बाद ब्लैकहेड रिमूवर से अपने चेहरे को साफ कर लें. अब इसके बाद अपने चेहरे पर 5 मिनट तक बर्फ के टुकड़े को रगड़े,

4- अब एक कटोरे में शहद, कोकोनट मिल्क या संतरे का रस और केला को लेकर अच्छे से मिला ले, अब इसे अपने चेहरे पर लगाकर मसाज करें. चेहरे की मसाज करते हुए बीच-बीच में बादाम और जैतून का तेल लगाते रहे, 10 मिनट तक मसाज करने के बाद ठंडे पानी से चेहरा धो लें.

5- अब स्ट्रॉबेरी, राइस पाउडर और शहद को मिलाकर पेस्ट बना ले और इसे अपने चेहरे पर 15 मिनट तक लगाएं.